بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 25
Issue - 10

राह-ए-ईमान

अक्टूबर
2023 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ).....4
5. सम्पादकीय 6
6. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना 7
7. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 8.9.2023).....8
8. ख़ुदा के मौजूद होने के वैज्ञानिक प्रमाण.....12
9. अरबईन नम्बर-4.....21
10. हुज़ूर अनवर से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर.....26
11. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

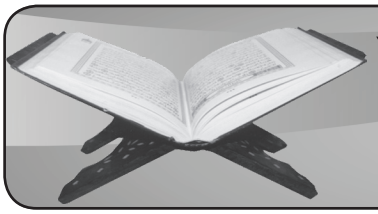

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۔ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۔ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَ سَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ⑬

अनुवाद:- 12-तू कह कि वह मौत का फ़रिश्ता जो तुम्हारे लिए नियुक्त किया गया है, अवश्य ही तुम्हारी जान निकालेगा, फिर तुम अपने रब्ब की ओर लौटाए जाओगे।

13-और यदि तुझे उस हालत का ज्ञान हो जाए जब कि अपराधी लोग अपने रब्ब के सामने अपना सिर झुकाए खड़े होंगे तथा कह रहे होंगे कि हे हमारे रब्ब! हम ने (जो कुछ तू ने कहा था) उसे देख लिया और सुन लिया। अत: अब तू हमें वापस लौटा दे ताकि हम अच्छे काम करें। निस्संदेह हमने तेरी बात पर पूरा-पूरा विश्वास कर लिया है। (सूरह अस्सजदह - 12,13)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत अब्दुल्लाह बिन औफ वर्णन करते है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन दिनों जबकि आप को एक दुश्मन से जंग लड़नी थी, सूरज ढलने का इंतज़ार किया और फिर आप खड़े हुए और नसीहत के रूप में फरमाया। हे लोगो! दुश्मन से मुठभेड़ की इच्छा मत करो। अल्लाह तआला से ख़ैर और भलाई की दुआ मांगो। लेकिन जब तुम्हें दुश्मन का मुकाबला करना ही पड़े तो धैर्य का प्रदर्शन करो और समझ लो कि जन्नत तलवार की छाया तले है। फिर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ मांगी। हे अल्लाह तआला तू किताब नाज़िल करने वाला है, बादल को चलाने वाला है दुश्मन की सेना को हराने वाला है अत: तू दुश्मन को हरा और उनके मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा। (मुस्लिम किताबुल जिहाद)

अनुवाद: हज़रत अबू मूसा अशअरी वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब एक दुश्मन के हमले का डर होता तो यह दुआ माँगते। हे अल्लाह तआला हम तुझे उनके सीनों में करते हैं। अर्थात तेरा भय उनके सीनों में भर जाए और हम उनकी बुराई से तेरी शरण चाहते हैं।

(अबु दाऊद)

★ ★ ★

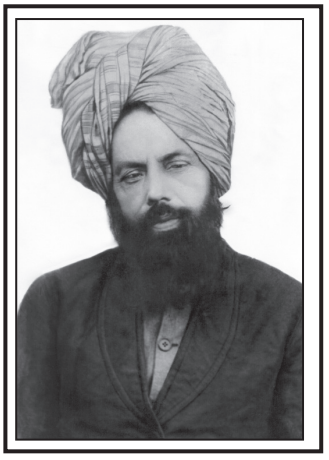

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

अपनी जमाअत के लिए एक बहुत ज़रूरी नसीहत

बुराई के दो प्रकार हैं। एक ख़ुदा के साथ किसी को भागीदार बनाना जिसे शिर्क कहते हैं उस के महत्व को न जानना उस की इबादत और आदेशों की पालना में सुस्ती करना। दूसरी यह कि उसके बंदों पर दया न करना, उनके अधिकारों को पूरा न करना। अब चाहिए कि दोनों प्रकारों की ख़राबी न करो। ख़ुदा के आदेशों की पालना पर स्थापित रहो। जो वचन तुमने बैअत में किया है इस पर स्थापित रहो ख़ुदा के बंदों को कष्ट न दो। क़ुरआन को बहुत ध्यानपूर्वक पढ़ो। इस पर अमल करो। हर एक प्रकार के व्यंग्य तथा व्यर्थ बातों और नास्तिकों की सभाओं से बचो। पांचों वक़्त नमाज़ को क़ायम रखो। अर्थात कोई ऐसा ख़ुदाई आदेश न हो जिसे तुम टाल दो। शरीर को भी साफ़ रखो और दिल को हर एक प्रकार के अनुचित द्वेष, ईर्ष्या, जलन से पवित्र करो। ये बातें हैं जो ख़ुदा तुम से चाहता है। दूसरी बात यह है कि कभी-कभी आते रहो। जब तक ख़ुदा न चाहे कोई व्यक्ति भी नहीं चाहता। नेकी का सामर्थ्य वही देता है। दो बातों का ज़रूर ख़्याल रखो एक दुआ दूसरे हमसे मिलते रहना ताकि संबंध बढ़े और हमारी दुआ का प्रभाव हो।

मुसीबतों से कोई ख़ाली नहीं रहता। जब से यह नबियों और रसूलों का सिलसिला चला आ रहा है जिसने सच को स्वीकार किया है उस की ज़रूर आज़माइश होती है। इसी तरह यह जमाअत भी ख़ाली न रहेगी। आस-पास के मौलवी प्रयास करेंगे कि तुम इस राह से हट जाओ। तुमको कुफ़्र के फ़तवे देवेंगे, लेकिन ये सब कुछ पहले ही से इसी तरह होता चला आया है लेकिन उस की परवाह नहीं करनी चाहिए बहादुरी से उस का मुक़ाबला करो।

दृढ़ता दिखाओ

फिर बैअत करने वालों ने मुन्करीन (इन्कार करने वालों) के साथ नमाज़ पढ़ने को पूछा।

हज़रत अक़्दस ने फ़रमाया कि :

उन लोगों के साथ कदापि न पढ़ो अकेले पढ़ लो। जो एक होगा वह जल्द देखेगा कि एक और उसके साथ हो गया है। दृढ़ता दिखाओ दृढ़ता में एक कशिश होती है। यदि कोई जमाअत का न हो तो नमाज़ अकेले पढ़ो परंतु जो इस सिलसिले में नहीं उस के साथ कदापि न पढ़ो, कदापि न पढ़ो। जो हमें ज़बान से बुरा नहीं कहता वह व्यावहारिक रूप से कहता है क्योंकि सच को स्वीकार नहीं करता। हाँ हर एक को समझाते रहो। ख़ुदा किसी न किसी को ज़रूर खींच लाएगा। जो व्यक्ति नेक नज़र आए सलामु-अलैकुम उस से रखो लेकिन यदि वह शरारत करे तो फिर यह भी छोड़ दो। (मल्फ़ूज़ात जिल्द-4)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब"

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

तीसरे प्रश्न का उत्तर...

हिन्दुओं ने भी अपने अवतारों के बारे में ऐसी ही पुस्तकें लिखी थीं और इसी प्रकार सिर से पैर तक ज़ोर लगा कर झूठ का पुल बाँधा था। अत: इस क़ौम पर भी इस इफ़्तिरा का अत्यन्त दृढ़ प्रभाव पड़ा और इस सिरे से देश के उस सिरे तक राम-राम और कृष्ण-कृष्ण हृदयों में रच गया। बात यह है कि सम्पादित पुस्तकें जिनमें बहुत सा इफ़्तिरा भरा हुआ हो उन क़ब्रों की तरह होती हैं जो बाहर से ख़ूब सफ़ेद की जाएँ और चमकाई जाएँ परन्तु अन्दर कुछ न हो। अन्दर का हाल उन अनभिज्ञ लोगों को क्या मालूम हो सकता है जो सैकड़ों वर्षों के बाद पैदा हुए और बनी-बनाई पुस्तकें ऐसी बरकत वाली और निस्वार्थ प्रकट करके उनको दी गईं कि जैसे वे किसी रूप और बनावट के साथ आकाश से उतरी हैं। तो वह क्या जानते हैं कि वास्तव में यह संग्रह किस प्रकार तैयार किया गया है? दुनिया में ऐसी तेज़ निगाहें जो पर्दों को चीरती हुई अन्दर घुस जाएँ और असल वास्तविकता पर सूचना पा लें और चोर को पकड़ लें बहुत कम हैं और इफ़्तिरा के जादू से प्रभावित होने वाली रूहें इतनी हैं जिनका अनुमान करना कठिन है। इसी कारण से एक संसार तबाह हो गया और होता जाता है। मूर्खों ने सबूत या सबूत न होने के ज़रूरी मामले पर कुछ भी विचार नहीं किया और मानवीय योजनाओं तथा प्रतिबंधों का जो एक निरन्तर तरीक़ा तथा स्वाभाविक बात है जो मानवजाति में सदैव से चली आती है उस से चौकस रहना नहीं चाहा और यों ही शैतानी जाल को स्वयं पर ले लिया। छल करने वालों ने उस दुष्ट कीमियागर की तरह जो एक सरल स्वभाव व्यक्ति से हज़ार रुपया नक़द लेकर दस-बीस लाख का सोना बना देने का वादा करता है सच्चा और पवित्र ईमान मूर्खों का खोया और एक झूठी ईमानदारी और झूठी बरकतों का वादा दिया जिनका बज़ाहिर कुछ भी अस्तित्व नहीं और न कुछ सबूत। अत: चपलताओं में, छल प्रपंचों में, दुनिया की मोहमाया में, तामसिक वृत्ति की पैरवी में उनको स्वयं से अधिक निकृष्ट कर दिया। अन्तत: यह नुक्ता स्मरण रखने योग्य है कि चमत्कारों तथा भविष्यवाणियों के बारे में जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से घटित हुईं पवित्र क़ुर्आन की केवल एक गवाही, इन्जीलों के एक बड़े ढेर से जो मसीह के चमत्कार इत्यादि के बारे में हो, हज़ारों गुना बढ़कर है। क्यों बढ़कर है? इसी कारण से कि स्वयं समस्त अन्वेषक पादरियों के इक़रार से इन्जीलों का वर्णन स्वयं हवारियों का अपना ही कलाम है और फिर अपना चश्मदीद भी नहीं और न रावियों का कोई सिलसिला प्रस्तुत किया है और न कहीं व्यक्तिगत अवलोकन का दावा किया। परन्तु पवित्र क़ुर्आन में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चमत्कारों के बारे में जो कुछ लिखा गया है वह सच्चे और पवित्र ख़ुदा की पवित्र गवाही है। यदि वह केवल एक ही आयत होती तब भी पर्याप्त होती। परन्तु अल्हम्दुलिल्लाह कि इन गवाहियों से सम्पूर्ण पवित्र

क़ुर्आन भरा पड़ा है। अब तुलना करनी चाहिए कि कहाँ ख़ुदा तआला की पवित्र गवाही जिसमें झूठ संभव नहीं और कहाँ जानबूझ कर झूठ और अतिशयोक्तिपूर्ण गवाहियाँ। --

جوئے سیم بہتر زِ صد تودۂ گل　　بہ نزدیک دانائے بیدار دل

झूठ गढ़ी हुई बातों पर क्यों आश्चर्य करना चाहिए। ऐसा बहुत कुछ हुआ है और होता है। ईसाइयों को स्वयं इक़रार है कि हम में से बहुत से लोग प्रारंभिक युगों में अपनी ओर से किताबें बना कर और बहुत कुछ अपने बुज़ुर्गों की ख़ूबियाँ उनमें लिखकर फिर ख़ुदा तआला की ओर उनको सम्बद्ध करते रहे हैं और दावा कर दिया जाता है कि वे किताबें ख़ुदा तआला की ओर से हैं★ अत: जबकि ईसाइयों और यहूदियों की पुरानी आदत यही जालसाज़ी चली आई है तो फिर कोई कारण मालूम नहीं होता कि मती इत्यादि इन्जीलों को उस आदत से क्यों बाहर रखा जाए? हालाँकि उस साहूकार की तरह जिसका रोज़नामचा और बहीखाता स्पष्ट विरोधाभास और संदेहों के कारण गुप्त हाल को प्रकट कर रहा हो। हर चार इन्जीलों से वह कारिस्तानी प्रकट हो रही है जिसको उन्होंने छुपाना चाहा था। इसी कारण से यूरोप और अमरीका में विचारकों के स्वभावों में संदेहों का एक तूफ़ान पैदा हो गया है और जिस अपूर्ण तथा परिवर्तित और साक्षात् ख़ुदा की ओर इन्जील मार्गदर्शन कर रही है उसके स्वीकार करने से वे नास्तिक रहना अधिक पसन्द करते हैं। अत: मेरे एक दोस्त अंग्रेज़ विद्वान ने अमरीका से अपने कई पत्रों द्वारा मुझे सूचना दी है कि इन देशों में बुद्धिमानों में से कोई भी ऐसा नहीं कि ईसाई धर्म को दोष से रिक्त समझता हो और इस्लाम के स्वीकार करने के लिए तैयार न हो। यद्यपि ईसाइयों ने पवित्र क़ुर्आन के अनुवाद अक्षरान्तरित और बिगाड़ कर यूरोप और अमरीका के देशों में प्रकाशित किए हैं परन्तु उनके अन्दर जो प्रकाश छुपा हुआ है वह पवित्र हृदयों पर अपना काम कर रहा है। अत: अमरीका और यूरोप आजकल एक जोश की हालत में हैं और इन्जील की आस्थाओं ने जो वास्तविकता के विरुद्ध हैं उन्हें बड़ी घबराहट में डाल दिया है यहाँ तक कि कुछ लोगों ने यह राय व्यक्त की कि मसीह या ईसा नाम (का) बज़ाहिर कोई व्यक्ति कभी पैदा नहीं हुआ अपितु इस से सूर्य अभिप्राय है और बारह हवारियों से बारह बुर्ज अभिप्राय हैं। और फिर इस ईसाई धर्म की वास्तविकता अधिकतर इस बात से खुलती है कि जिन निशानियों को हज़रत मसीह ईमानदारों के लिए ठहरा गए थे उनमें से एक भी इन लोगों में नहीं पाई जाती। हज़रत मसीह ने फ़रमाया था कि यदि तुम मेरा अनुकरण करोगे तो प्रत्येक प्रकार की बरकत और स्वीकारिता में मेरा ही रूप बन जाओगे तथा चमत्कार और स्वीकारिता के निशान तुम को दिए जाएंगे और तुम्हारे मोमिन होने की यही निशानी होगी कि तुम भिन्न-भिन्न प्रकार के निशान दिखा सकोगे और जो चाहोगे तुम्हारे लिए वही होगा। और कोई बात तुम्हारे लिए असंभव नहीं होगी। परन्तु ईसाइयों के हाथ में इन बरकतों में से कुछ भी नहीं। वे उस ख़ुदा से अपरिचित मात्र हैं जो अपने विशेष बन्दों की दुआएं सुनता है और उन्हें आमने-सामने प्रेम और दया का उत्तर देता है तथा उनके लिए विचित्र-विचित्र काम दिखाता है परन्तु सच्चे मुसलमान जो उन ईमानदारों के स्थानापन्न और वारिस हैं जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं वे उस ख़ुदा को पहचानते और उसकी कृपा के निशानों को देखते हैं। और अपने विरोधियों के सामने सूर्य के समान जो अंधकार के सामने हो बहुत अंतर रखते हैं। (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ 58-64)

सम्पादकीय

धार्मिक झगड़ों को रोकने का उपाय

हमारे देश में आए दिन धर्म के नाम पर झगड़े की खबरें सुनने या पढ़ने मिल जाती हैं जबकि यदि धर्म को बीच से निकाल दिया जाए तो आपस में बहुत प्यार को देखने मिलता है। एक ऐसा व्यक्ति जिसे हम जानते भी नहीं हैं धर्म के नाम पर उसे मार देते हैं या पीटते हैं या उसका कुछ और नुकसान कर देते हैं। आखिर क्यों? धर्म का उदय इस उद्देश्य से तो कदापि नहीं हुआ था। धर्म तो मनुष्य मात्र को मानवता इंसानियत सिखाने आया था। हम सब को चाहिए कि धर्म के उस स्वरूप को व्यवहार में लाएं जो हमें इंसान बनाए रखे, हिंसक न होने दे या यों कहें कि पशु न बनने दे। आज की युवा पीढ़ी से और हमारे बुजुर्गों से चाहे वे किसी भी धर्म को मानते हों, मैं यह निवेदन करता हूँ कि अपने अपने स्तर पर प्रयास करें युवाओं को समझाएं कि धर्म के नाम पर नफरत को बंद करें, अपने रोजगार और परिवार के भविष्य की चिंता करें। जमात अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने हमें इसका एक उपाय बताया है और जमात अहमदिया पूरी तरह से इसका पालन करती है। वह उपाय निम्नलिखित हैं :

धार्मिक झगड़ों को रोकने का उपाय -

धार्मिक झगड़ों के रोकने का उपाय यह है कि एक-दूसरे को गालियाँ देना और बुरा-भला कहना बन्द कर दिया जाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वादा किया था कि अगर लोग हम पर कटुता करना छोड़ दें तो हम भी सख़्त भाषा का प्रयोग करना छोड़ देंगे अन्यथा कभी-कभी सख़्ती का जवाब सख़्ती से ही देना पड़ता है। क्योंकि अगर जवाब न दिया जाए तो कुछ लोग समझते हैं कि इनके पास जवाब ही नहीं। अत: अगर विभिन्न धर्मों के लोग इस बात में हमारे साथ एक होने के लिए तैयार हो जाएँ तो मैं अपनी जमाअत की ओर से जो कई लाख लोगों पर आधारित है और जिसका मैं अकेला एक इमाम हूँ अपनी ओर से यह ऐलान करता हूँ कि जो लोग गालियों को छोड़कर नर्मी और सुलह की ओर एक क़दम बढ़ाएँगे तो मैं दस क़दम बढ़ाऊँगा और जो हमारी ओर एक हाथ बढ़ेगा हम उसकी ओर दस हाथ बढ़ेंगे। दूरी का कारण हमेशा कटुता और दिल दु:खाना ही होता है। अत: हमारे अपने अन्दर से ही जब एक फ़िर्क़े ने सख़्ती और गाली गलौज से काम लिया तो एकता के हज़ारों बिन्दुओं के बावजूद हमें उनसे अलग होना पड़ा। जब अपने ही गालियाँ दें तो उनसे दूरी हो जाती है, तो पराए तो फिर पराए ही हैं। लेकिन सोचना चाहिए कि इस फूट और लड़ाई झगड़े के कारण कितना फ़साद बढ़ रहा है और इसको दूर करने के लिए कितनी क़ुर्बानी की आवश्यकता है। एक तरफ़ इस फ़साद को रखो और दूसरी तरफ़ उस क़ुर्बानी को तो मालूम हो जाएगा कि फ़साद के मुक़ाबले में उस क़ुर्बानी की जो विभिन्न धर्मों के लोगों को देनी पड़ेगी कुछ भी तुलना नहीं। क्योंकि दूसरे धर्मों के बुज़ुर्गों को गालियाँ देने से किसी मज़हब को कोई फ़ायदा नहीं। उदाहरणत:अगर कोई हिन्दू या आर्य आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गाली दे तो उसे क्या फ़ायदा पहुँच सकता है। गाली तो ज़िन्दा का कुछ बिगाड़ नहीं सकती, मर चुके का क्या बिगाड़ेगी। फिर उस इन्सान का, जिसको ख़ुदा तआला ने

शेष 25 पर

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना

क़ुरआने करीम के गुण

जब से कि क़िस्से हो गए मक्सूद[1] राह में
आगे क़दम है कौम का हर दम गुनाह में
तुम देखते हो क़ौम में इफ़्फ़त[2] नहीं रही
वो सिदक[3], वो सफ़ा[4], वो तहारत नहीं रही
मोमिन के जो निशाँ हैं वो हालत नहीं रही
उस यारे बे निशाँ की मुहब्बत नहीं रही
इक सैल[5] चल रहा है गुनाहों का ज़ोर से
सुनते नहीं हैं कुछ भी मआसी[6] के शोर से
क्यों बढ़ गए ज़मीं पे बुरे काम इस क़दर
क्यों हो गए अज़ीज़ो! ये सब लोग कोरो[7] कर्र
क्यों अब तुम्हारे दिल में वो सिद्को सफ़ा नहीं
क्यों इस क़दर है फ़िस्क़[8] कि ख़ौफ़ ओ हया[9] नहीं
क्यों ज़िन्दगी की चाल सभी फ़ासिकाना है
कुछ इक नज़र करो कि ये कैसा ज़माना है
इस का सबब[10] यही है कि ग़फ़लत ही छा गई
दुनियाए दूँ कि दिल में महब्बत समा गई
तक़्वा के जामे[11] जितने थे सब चाक[12] हो गए
जितने ख्याल दिल में थे नापाक हो गए
हर दम के ख़ुब्सो फ़िसक़ से दिल पर पड़े हिजाब
आँखों से उन की छुप गया ईमाँ का आफ़ताब
जिस को ख़ुदाए अज्ज वो जल पर यक़ीं[13] नहीं
उस बद नसीब शख़्स का कोई भी दीं नहीं
पर वो सईद[14] जो कि निशानों को पाते हैं
वो उस से मिल के दिल को उसी से मिलाते हैं
वो उस के हो गए हैं उसी से वो जीते हैं
हर दम उसी के हाथ से इक जाम पीते हैं

1. लक्ष्य। 2. पवित्रता। 3. सच्चाई। 4. पवित्रता। 5. तूफ़ान। 6. पाप, 7. अन्धा बहरा। 8. दुराचार। 9. लज्जा। 10. कारण। 11. वस्त्र, 12. फट गए। 13. विश्वास। 14. सौभाग्यशाली

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 8.9.2023 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

जलसा सालाना जर्मनी का सफल आयोजन, प्रबन्धकों तथा कार्यकर्ताओं को स्वर्णिम उपदेश तथा शामिल होने वाले अतिथियों की अभिव्यक्तियाँ।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- अल्लाह तआला का अत्यंत फ़ज़ूल व उपकार है कि जर्मनी जमाअते अहमदिया का जलसा गत सप्ताह सफलता पूर्वक आयोजित हुआ। सबसे पहले तो हमें अल्लाह तआला का आभारी होना चाहिए कि उसने हमें एक लम्बे अन्तराल के बाद विराट स्तर पर सामान्य अवस्थानुसार जलसा आयोजित करने का सामर्थ्य प्रदान किया।

प्रबन्धकर्ताओं तथा जलसे में शामिल होने वालों को अल्लाह तआला का आभारी होना चाहिए, कार्यकर्ताओं को भी शुक्र अदा करना चाहिए कि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा करने का सुअवसर प्रदान किया। इस विराट व्यवस्था में अनेक स्थानों पर कमियाँ रह गई होंगी, कुछ अतिथियों को भी कठिनाई का सामना करना पड़ा, परन्तु चूँकि दीन के उद्देश्य से आए थे इस लिए उन्होंने कोई शिकायत नहीं की, किन्तु मुझे पता चला कि कुछ व्यवस्था उचित नहीं थी।

कार्यकर्ताओं ने तो बड़े परिश्रम के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया, जहाँ उनकी अथवा विभाग की कोई कमज़ोरी प्रकट हुई तो वह उनके अफ़सरों की ओर से अनुचित निर्देशों के कारण से हुई। जहाँ मेहमानों को कठिनाई हुई उसके बारे में अफ़सर उत्तरदायी हैं, इस्तिग़फ़ार करना चाहिए तथा भविष्य के लिए लाल किताब में लिख कर सुधार करने की चेष्टा करनी चाहिए।

लिफ़्ट काम नहीं कर रही थी, स्नान गृहों की भारी कमी थी, पानी की व्यवस्था उचित नहीं थी। सैक्योरिटी वाले अकारण ही रोकें डालते रहे, अनुवाद में भी कठिनाई का सामना हुआ, आवाज़ की भी समस्या बनी रही। कुछ मेहमानों ने शिकायत की कि हम ख़ुत्बः नहीं सुन सके। जलसे के चलते समय भी मैं प्रबन्धकों को ध्यान दिलाता रहा। अफ़सर जलसा सालाना, अफ़सर जलसा गाह तथा आवाज़ के विभाग

के इंचार्ज इसके लिए उत्तरदायी हैं। लोग यहाँ जलसा सुनने के लिए आते हैं, यदि सुनाने की व्यवस्था सही नहीं तो फिर जलसे का लाभ क्या है। शेष व्यवस्था में कमियों को सहन किया जा सकता है परन्तु जलसा सुनने की व्यवस्था में कोई कमी सहन नहीं की जा सकती।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह कोई मेला नहीं है कि जहाँ लोग एकत्र हो जाएँ। आवाज़ न आने के कारण कुछ अवसरों पर पीछे मेले वाला दृश्य था। मेरे अनुमान के अनुसार कम से कम सात आठ हज़ार लोग ऐसे होंगे जिन्होंने जलसा सही नहीं सुना। प्रबन्धन कर्ता लोगों को उत्तरदायी बतलाते हैं, यदि लोग बातें कर रहे थे तो तर्बियत की कमी है तथा मिश्नरी इंचार्ज एवं मुरब्बी इसके लिए उत्तरदायी हैं। क्यूँ पूरे वर्ष भर तर्बियत नहीं करते, लोगों को दोषी न बनाएँ। अहमदी को ध्यान दिलाया जाए तो साधारणत: सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखाता है। इस बार महिलाओं में पुरुषों की अपेक्षा अच्छा अनुशासन था। पुरुषों की तर्बियत के विभाग को अपनी चिंता करनी चाहिए।

उन्नति करने वाली क़ौमें अपनी कमज़ोरियों पर नज़र रखें, तभी सफल होती हैं। सब अच्छा है कह कर प्रगति के रास्ते बन्द न करें तथा न ही इसमें शर्म की बात है। अल्लाह तआला विभागों के अफ़सरों को अपने सुधार का सामर्थ्य प्रदान करे। इन सारी कमज़ोरियों के बावजूद अल्लाह तआला का हम पर यह उपकार है कि उसने हमारी कमज़ोरियों पर पर्दा डाल दिया और जलसे पर आए हुए अतिथि गणों ने सामान्यत: बड़ा अच्छा असर लिया। मेहमानों ने अपने मूल्यवान अनुभव बयान किए। जर्मनी की जमाअत को अल्लाह तआला का अति आभारी होना चाहिए कि उसने इस जलसे के माध्यम से लोगों में इस्लाम की मूल शिक्षा पेश करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

हुज़ूर-ए-अनवर ने मेहमानों के अनुभव पेश करते हुए फ़रमाया कि बलग़ारिया की एक ईसाई महिला वेरोनीका साहिबा जो वकील तथा पी.एच.डी डाक्टर हैं, कहती हैं कि ऐसा अति उत्तम जलसा आयोजित किया गया कि किसी के चेहरे पर घबराहट तथा परेशानी नहीं देखी। मुझे इस अवसर ने रूहानी रूप में बहाल किया। बलग़ारिया की ही एक अन्य ईसाई महिला नतालिया कहती हैं कि जलसा मेरे मस्तिष्क में सदैव चित्रित रहेगा, पहली बार हज़ारों मुसलमानों को एक साथ इबादत करते देखा, समस्त लोग प्रसन्नता के साथ मिले, ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का सम्बोधन अति प्रभावित करने वाला था।

मक़दूनिया की एक ईसाई पत्रकार महिला कहती हैं कि जलसे की व्यवस्था अति उत्तम स्तर की थी। मेरे लिए अति गौरव पूर्ण है कि मैं ऐसे जलसे में शामिल हुई जिसमें विभिन्न धर्मों एवं राष्ट्रों के लोग शामिल थे। मक़दूनिया ही के एक अन्य पत्रकार कहते हैं कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के भिन्न भिन्न विषयों पर सम्बोधनों ने मुझे बड़ा प्रभावित किया। अनेक अहमदी मुसलमानों से बात करने का अवसर मिला, बड़ी मुहब्बत तथा मुसकुराहट के साथ बात करते थे। मुहब्बत सबके लिए नफ़रत किसी से नहीं का अमली नमूना देखा तथा इसी मोटो (लक्ष्य) से दुनिया में अमन हो सकता है।

सलवाकिया की एक महिला टीचर मारटीना साहिबा कहती हैं कि मेहमान नवाज़ी का ऐसा नमूना कभी नहीं देखा। बैअत तथा नमाज़ के दौरान अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण नहीं रख सकी। सलवाकिया

के एक अन्य मेहमान कहते हैं कि जलसे से पहले इस्लाम के बारे में कुछ पता नहीं था। जलसे में शामिल होकर मुझे अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर का ज्ञान प्राप्त हुआ। अहमदियों ने बड़े लगन और जोश से मेहमानों की सेवा की। सलवाकिया के एक अन्य मेहमान कहते हैं कि मुझे अहमदियों के शिष्टाचार तथा मेहमान नवाज़ी ने बड़ा प्रभावित किया। अहमदी अपने धर्म के अनुसार कर्म करने वाले हैं। अलबानिया के एक मेहमान प्रोफ़ैसर डाक्टर साहब कहते हैं कि जलसा अति महान था, इस जलसे में देखा कि खिलाफ़त ही आपकी एकता का आधार है।

बोसनिया से इतिहास के प्रोफ़ैसर साहब कहते हैं कि जलसे में हर चीज़ योजनाबद्ध थी, बड़ी अच्छी व्यवस्था थी। ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की पहली तक़रीर से ही मेरा दिल साफ़ हो गया था। उनसे मुलाक़ात ने मेरे मस्तिष्क पर अति सकारात्मक प्रभाव छोड़ा तथा मुझे अत्यंत शांति अनुभव हुई। बोसनिया से रैड क्र ास की सैक्रेट्री इन्दरा हैदर साहिबा कहती हैं कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त से मुलाक़ात मेरे लिए बड़ी ख़ुशी का कारण रही। ख़िलाफ़त ने विश्व स्तर पर अहमदियों को एक लड़ी में पिरोया हुआ है, मुझे मुसलमान होने पर गर्व की अनुभूति हुई।

जार्जिया की एक महिला कहती हैं कि पहली बार जलसा देखने का अवसर मिला, छोटे बड़े सब कठोर परिश्रम से काम कर रहे थे। विश्व व्यापी बैअत को देख कर भावनाओं पर नियन्त्रण रखना कठिन था। जमाअत के ख़लीफ़: ने क़लमी (प्रचार प्रसार) जिहाद की विचार धारा हमारे सामने रखी जिसकी मैं शत-प्रतिशत पुष्टि करती हूँ। मेरा सुदृढ़ विश्वास है कि भविष्य में दुनिया इस्लाम के बारे में चिंतन करेगी तथा इसके माध्यम से ख़ुदा को पहचानने वाले बनेंगे।

जार्जिया के एक सुन्नी स्कालर कहते हैं कि ईसाईयत छोड़ कर इस्लाम क़बूल किया, मदीना मुनव्वरा में रहा, सुना था कि अहमदी हमें काफिर कहते हैं तथा उनकी आस्था भिन्न है। जलसे में जमाअत को निकट से देखा, ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के सम्बोधनों को ध्यान पूर्वक सुना, आप लोगों को काफिर कहना ग़लत है। जलसे के तीन दिनों में मेरे समस्त सवालों के जवाब मिले।

कोसोवो से आने वाले ऐजुकेशन डाइरैक्टर कहते हैं कि जलसे के दिनों में सम्बोधन सुने, जो मेरे मस्तिष्क पर चित्रित रहेंगे। मेहमान नवाज़ी का अनुभव हमारे दिलों में सदैव रहेगा। कोसोवो के मेयर कहते हैं कि इस मूल्यवान जलसे में एकता एवं बन्धुत्व के दृश्यों ने मेरे मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के भाषण प्रभाव करने वाले थे, आतिथ्य, मेहमान नवाज़ी अद्भुत थी।

कैमरून के एक चीफ़ इमाम साहब कहते हैं कि पहली बार इतने बड़े समागम में शामिल हुआ हूँ। आश्चर्य जनक है कि विभिन्न रंगों के लोग एक परिवार की भांति मिले। जमाअत के इमाम के सम्बोधन विवेक पूर्ण तथा इस्लामी शिक्षा की छाप थे, यदि हम इसके अनुसार कर्म करें तो जीवन जन्नत बन जाए। लिथवानिया की एक महिला हैं जिन्होंने स्वयं सेवा के रूप में इस्लामी उसूल की फ़लास्फ़ी का लिथवानियन भाषा में अनुवाद किया है, कहती हैं कि जलसा सालाना ने मुझे शानदार अवसर दिया कि जमाअत को परख सकूँ। अहमदिया जमाअत अपने लक्ष्य की ओर वास्तविक रंग में चली जा रही है।

तुर्क महिला टीचर यासमीन साहिबा, जो जर्मनी में रहती हैं, कहती हैं कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का सम्बोधन मेरे सवालों का जवाब था। जलसे का वातावरण मुझे पसन्द आया। इतने अधिक लोगों का जमा होना तथा प्रेम की लड़ी में पिरोये हुए होना, एक विचित्र एवं विशेष बात थी। सर्बिया के एक जर्नलिस्ट कहते हैं कि जलसे में आपकी सुन्दर व्यवस्था ने चकित कर दिया, न प्रबन्ध कर्ताओं में तथा न ही चालीस हज़ार लोगों में कोई बुराई दिखाई दी। सर्बिया की ही एक अन्य जर्नलिस्ट महिला कहती हैं कि मेरे दिल में व्यवस्थापकों तथा सम्मिलित होने वालों के लिए मुहब्बत की भावनाएँ हैं। ख़लीफ़: के महिलाओं के लिए सम्बोधन ने बड़ा प्रभावित किया।

एक जर्मन ईसाई कैथोलिक टी वी के प्रतिनिधि कहते हैं कि ख़लीफ़: का सम्बोधन प्रभाव पूर्ण था। सम्बोधन ऐसा था कि केवल सुन लेना की पर्याप्त नहीं, चिंतन मनन करना चाहिए। एक जर्मन महिला जो जलसे में आदर भाव के साथ दुपट्टा ओढ़े बैठी रहीं, कहती हैं कि सम्बोधन के समय मेरे हृदय पर इतना अधिक प्रभाव हुआ कि मेरी आँखें नम हो गईं, ख़लीफ़: की बातें दिल को छू लेने वाली थीं।

जलसा जर्मनी में मीडिया कवरैज अच्छी हुई, चार टी वी चैनल्ज़ के द्वारा इकतालीस मिलयन, गयारह समाचार पत्रों के द्वारा पचास मिलयन, पाँच रेडियो स्टेशन्ज़ के द्वारा चौदह मिलयन तथा ऑन लाईन के माध्यम से दो मिलयन लोगों तक ख़बर पहुंची। उनका विचार है कि इस प्रकार एक सौ आठ मिलयन तक जलसे की कवरैज पहुंची है, अल्लाह तआला इसके सुन्दर परिणाम पैदा करे।

लोगों की जो कुछ अभिव्यक्तियाँ बयान की हैं, अल्लाह तआला का उपकार एवं आभार है कि वह हमारी त्रुटियों पर पर्दा डालता है। विभिन्न मस्जिदों के उद्घाटन पर भी लोगों ने सकारात्मक अभिव्यक्तियाँ की हैं कि इस्लाम के बारे में हमारे विचार बदल गए हैं, शिकायत भी की है कि हमारे जानकार अहमदियों ने हमें इस्लाम की सुन्दर शिक्षा के विषय में पहले से अवगत नहीं किया। अत: हर अहमदी को हीन भावना से रिक्त होकर इस्लाम तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का परिचय करवाना चाहिए। केवल पम्फ़लैट बांट देना उद्देश्य की पूर्ति नहीं करता, लोगों में अभी भी धर्म की बातें सुनने में रूचि है।

हमें हर जगह अपने निरीक्षण करने की आवश्यकता है, कमज़ोरियों पर भी ध्यान रहना चाहिए, बेहतरी की बड़ी गुंजायश है, सुन्दर से सुन्दरतम की खोज जारी रहनी चाहिए। दुआ करके तथा अल्लाह तआला से मदद मांगते हुए काम को आरम्भ करें, प्रबन्धकों तथा शामिल होने वालों को सदैव जलसे के उद्देश्य को पूरा करने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। अल्लाह तआला हम पर दया करे तथा भविष्य में सबको सुन्दर रंग में जलसे के उद्देश्य को पूरा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131

☆ ☆ ☆

ख़ुदा के मौजूद होने के वैज्ञानिक प्रमाण

(डॉ. फ़हीम यूनुस क़ुरैशी साहब, डिप्टी अमीर जमात अमेरिका)

अनुवादक : इब्नुल मेहदी लईक एम ए

ये हमारी अपनी कहानी है लेकिन हमें याद नहीं। जब हम इस दुनिया में आये तो हम बच्चे थे, कमज़ोर थे। यदि भूख लगती थी तो चल कर अपनी माँ के पास नहीं जा सकते थे। इसलिए रोते थे और फिर मां लपक कर हमारे पास पहुंच जाती थी। इस अनुभव के पीछे एक संवेदनशील विज्ञान है। एमआरई स्कैन शोध से पता चलता है कि बच्चे के रोने की आवाज मां के कानों के पर्दे से होते हुए उसके मस्तिष्क तक पहुँचती है और फिर मां के सिर में एक चने के आकार की ग्रंथि तक जाती है जिसे पोस्टीरियर पिट्यूटरी कहा जाता है। इसमें ऑक्सीटोसिन हार्मोन निकलता है जो रक्तप्रवाह के साथ माँ के स्तनों में दूध उतर आता है। यह प्रक्रिया कुछ ही सेकंड में पूरी हो जाती है और यह मां के नियंत्रण में भी नहीं होती है।

माँ और बच्चे का यह रिश्ता एक रूपक है। अल्लाह तआला तो 'लम यलिद व लम यूलद' है अर्थात न उसने किसी को जना है और न वह खुद जना गया है। लेकिन इस दृष्टांत में हमें ख़ुदा के मौजूद होने का जीवंत प्रमाण मिल सकता है।

आमतौर पर, जब ख़ुदा के मौजूद होने के तर्कों की बात आती है, तो ऐसा महसूस होता है मानो हमारा लक्ष्य किसी अधर्मी को बहस में हराना है। लेकिन अगर आप पिछले दो सालों से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की वर्चुअल मुलाकातों को सुनें, तो हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बार-बार कह रहे हैं कि हमें पहले अपने बच्चों का ख्याल रखना होगा कि वे इन दहरियों के चंगुल में न आ जाएँ। (अल-फज़ल इंटरनेशनल, जनवरी 13, 2023, पेज 2)

इसी इरशाद के तहत आज की बातचीत हमारे बच्चों और हमारे बुजुर्गों से और हमें यह बातचीत पवित्र कुरआन की रोशनी में करनी होगी। कोई कह सकता है कि हमारे दहरिए दोस्त कुरआन की बातें क्यों मानेंगे? ठीक है। लेकिन हम क़ुरआन को इसलिए प्रस्तुत करते हैं क्योंकि यह वैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह ख़ुदा की तरह कोई अदृश्य चीज़ नहीं है। इसका अवलोकन किया जा सकता है। उनके तर्कों को अनुभव द्वारा समर्थन किया जा सकता है। 7वीं सदी का कुरआन अभी भी इस्तांबुल के टोपकापी महल में जाकर हाथ में थामा जा सकता है। और कोई नास्तिक भी यह नहीं कहेगा कि हम ने पिछले 5-6 सौ वर्षों में कुरआन की लिपि में बदलाव किया है। ताकि उसमें पाई जाने वाली आज की आधुनिक वैज्ञानिक खोजों को जोड़ा जा सके। बात यह है कि इस्लाम अहमदियत विज्ञान या उसके संबंध में सवालों के जवाब देने से नहीं डरता हमने तो विज्ञान में बहुत उन्नति करनी है। हज़रत खलीफ़तुल मसीह ने तो नोबेल पुरस्कार कि प्राप्ति को विज्ञान के क्षेत्र में न्यूनतम लक्ष्य बताया है। लेकिन हम एक संपूर्ण विज्ञान की तस्वीर चाहते हैं। न कि उसका यह आधा अधूरा और अहंकारी संस्करण। माता-पिता के रूप में हमारा कर्तव्य है कि जैसे ही हमारे बच्चे स्कूल में विज्ञान के बारे में सीखना शुरू करें, हम अपने बच्चों को बताएं कि बहुत से विज्ञान के

रहस्य पवित्र कुरान 1400 वर्ष पूर्व बता चुका है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि॰ फ़रमाते हैं : कुरान ख़ुदा का कथन है जबकि विज्ञान ख़ुदा का कार्य है। आप में से ऐसे प्राथमिक विद्यालय के बच्चे होंगे जो अपनी विज्ञान कक्षाओं में सीख रहे होंगे कि लगभग 500 वर्ष पहले एक युग बीत चुका है जिसमें कापरनिकस, गैलीलियो और केपर जैसे वैज्ञानिक शामिल थे जिन्होंने यह तर्क दिया था कि पृथ्वी अपनी सौर कक्षीय प्रणाली में स्थिर नहीं हैं बल्कि यह इस सौरमंडल में परिक्रमा जारी रखे हुए हैं। लेकिन क्या आपने यह भी सुना है कि यह रहस्य कुरान ने 1400 वर्ष पूर्व बयान कर दिया था। अल्लाह तआला सूरा अँबिया आयत 33 में फरमाता है "वही है जिसने रात और दिन बनाया, और सूर्य और चंद्रमा प्रत्येक अपनी कक्षा में घूम रहे हैं।

जब माध्यमिक विद्यालय के बच्चे जीव विज्ञान और भौतिकी कक्षा में पढ़ रहे होते हैं, तो प्रकृति ने हर चीज़ का एक जोड़ा बनाया है। उदाहरण के लिए, फूलों के नर भाग को स्टेमन्स और मादा भाग को पिस्टल्स कहा जाता है। लेकिन क्या हमने अपने बच्चों को बताया है कि सैकड़ों साल पहले, अल्लाह तआला ने सूरह यासीन, आयत 37 में कहा था: "पवित्र है वह ज़ात जिसने सभी प्रकार के जोड़ों को बनाया है, उसमें से भी जिसको ज़मीन उगाती है और स्वयं उनकी जानों में से भी और उन चीजों में से भी जिनको वह नहीं जानते। यह अंतिम भाग ध्यान देने योग्य है। "उन चीज़ों के बारे में भी जिन्हें वे नहीं जानते" जब यह आयत नाज़िल हुई थी तो हम नहीं जानते थे, दुनिया को यह नहीं पता था कि पदार्थ की जोड़ी एंटीमैटर है। इसकी खोज 1933 में पॉल डिराक ने की थी और नोबेल पुरस्कार जीता था। दुनिया को यह नहीं पता था कि परमाणु के अंदर प्रोटॉन और न्यूट्रॉन के जोड़े होते हैं। अर्नेस्ट रदरफोर्ड और जेम्स चैडविक ने इन्हें 1919 और 1932 में खोजा था। दुनिया नहीं जानती थी कि इन प्रोटॉन और न्यूट्रॉन के भीतर और भी छोटे उपपरमाण्विक कण होते हैं जिन्हें क्वार्क कहा जाता है। मरे गेल-मैन और जॉर्ज ज़िवग ने 1964 में क्वार्क की खोज की। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि रेत के एक कण में 450 मिलियन जोड़े क्वार्क होते हैं? दुनिया को यह सब मालूम न था, लेकिन कुरान की आयतों से मालूम होता है कि हमारा ख़ुदा जानता था।

एक ओर कोपरनिकस, केप्लर, गैलीलियो, डिराक, रदरफोर्ड, चाडविक, गेलमैन और नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक करोड़ों पाउंड की प्रयोगशालाओं में काम कर रहे हैं और दूसरी ओर अरब के रेगिस्तान में एक अनपढ़ रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे। यदि इस ब्रह्माण्ड का कोई रचयिता नहीं है, कोई ख़ुदा नहीं है, तो किसने पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ये वैज्ञानिक रहस्य बताए? यदि यह महज़ एक संयोग है तो ऐसे संयोग अन्य धार्मिक पुस्तकों में क्यों नहीं मिलते?

समुद्र विज्ञान का अध्ययन करने वाले कॉलेज के बच्चे जानते हैं कि समुद्र पानी की तीन परतों से ढका होता है। पहले 200 मीटर को यूफ़ोटिक ज़ोन कहा जाता है, जहाँ प्रकाश प्रवेश करता है। फिर 200 से 1000 मीटर की परत को डिस्फ़ोटिक ज़ोन कहा जाता है, जहाँ रोशनी कम होती है। लेकिन एक किलोमीटर के बाद तीसरी लेयर एफ़ोटिक ज़ोन में पूरी तरह से अंधेरा हो जाता है। अल्लाह तआला सूरह नूर आयत 41 में फरमाता है :

अनुवाद: "या (उनके कर्म) गहरे समुद्र में अंधकार के समान हैं, जो लहर पर लहर से ढका हुआ है।"

2012 में जब जेम्स कैमरून प्रशांत महासागर की तलहटी में गए तो उन्हें लगा कि उन्हें अजीब मछलियां दिखेंगी। उसने क्या देखा? अँधेरा। (द न्यूयॉर्क टाइम्स, विलियम ब्रॉड। 26 मार्च, 2012) विशेषज्ञ तैराकों का भी कहना है कि समुद्र की गहराई इतनी अँधेरी है कि व्यक्ति को अपना हाथ भी दिखाई नहीं देता। सूरह नूर आयत 41 में अल्लाह तआला कहता है, "जब वह अपना हाथ बाहर निकालता है, तो उसे दिखाई भी नहीं देता।"

पैगंबर (PBUH) ने कभी भी वैज्ञानिकों की तरह समुद्र की यात्रा नहीं की। यदि पवित्र कुरआन ख़ुदा का वचन नहीं है, तो उस पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को समुद्र की गहराई में छिपा अंधेरा किसने दिखाया?

और कुछ चीजें हैं जिनके बारे में विज्ञान कहता है कि हम नहीं देख सकते लेकिन पवित्र कुरआन कहता है कि आप उन्हें देखेंगे। सूरह अंबिया, आयत 31 में, अल्लाह तआला फरमाता है:

اَوَلَمۡ یَرَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡۤا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ کَانَتَا رَتۡقًا فَفَتَقۡنٰہُمَا ؕ وَجَعَلۡنَا مِنَ الۡمَآءِ کُلَّ شَیۡءٍ حَیٍّ ؕ اَفَلَا یُؤۡمِنُوۡنَ.

अनुवाद: "क्या उन्होंने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने इनकार किया कि आकाश और धरती बंद थे, तो हमने उन्हें खोल दिया?"

यह आयत बिग बैंग और ब्लैक होल की भविष्यवाणी करती है, लेकिन आगे विचार करने पर एक सूक्ष्म बिंदु स्पष्ट हो जाता है। अल्लाह तआला कह रहा है اَوَلَمۡ یَرَ "क्या उन्होंने नहीं देखा?" केवल दस साल पहले, वैज्ञानिकों का मानना था कि ब्लैक होल को देखा नहीं जा सकता क्योंकि प्रकाश भी बाहर नहीं निकाल सकता। लेकिन चार साल पहले इवेंट होरिजन टेलीस्कोप से वैज्ञानिकों ने ब्लैक होल भी देखे थे।

और हम सभी ने नेशनल ज्योग्राफिक और अन्य पत्रिकाओं में उनकी तस्वीरें देखीं। اَوَلَمۡ یَرَ क्या यह सब देखने के बाद भी हमें अल्लाह पर विश्वास करने से इंकार कर देना चाहिए? 1400 साल पहले जिसने ये रहस्य खोले थे?

देखो बच्चे जवान हो जाएं, शादी कर लें, अल्लाह उन्हें औलाद दे। फिर भी, अल्लाह के कुरानी तर्क उनका मार्गदर्शन करते रहते हैं। बच्चे पैदा करने की इच्छा एक स्वाभाविक बात है और इसमें कोई बुराई नहीं है। लेकिन ऐसी मांओं को ताना देना और दुख पहुंचाना, जिन्हें अल्लाह ने सिर्फ बेटियों से नवाज़ा है, ये अन्याय है। लेकिन 20वीं सदी की शुरुआत में कई वैज्ञानिक प्रयोगों से यह साबित हुआ कि पैदा होने वाले बच्चे का लिंग केवल पुरुष के रोगाणुओं या गुणसूत्रों से संबंधित होता है। महिला का इससे कोई लेना-देना नहीं है। पश्चिमी जगत के लिए यह एक आश्चर्यजनक वैज्ञानिक खोज थी। लेकिन कुरआन 1400 वर्षों तक इन उत्पीड़ित माताओं के पक्ष में खड़ा रहा। अल्लाह तआला सूरह नजम आयत 46 में कहता है, "उसने नर और मादा को शुक्राणु से बनाया"। बेटियों, बहुओं, माताओं पर अत्याचार करने वालों को सोचना चाहिए कि एक दिन उस ख़ुदा को भी जवाब देना है।

ऐसे कई उदाहरण हैं जहां अल्लाह तआला ने पवित्र कुरआन में कुछ कहा है और विज्ञान ने इसे सैकड़ों साल बाद खोजा है।

पहाड़ शांत नहीं हैं, बल्कि बादलों की तरह घूम रहे हैं, सूरह नमल: 89, हमने हर जीवित चीज़ को पानी से बनाया, सूरह अल-अंबिया: 31, त्वचा में सबसे अधिक दर्द महसूस होता है, अल-निसा: 57. भ्रूणविज्ञान अल-मुमिनुन का विवरण: 14, जेनेटिक इंजीनियरिंग, निसा: 120, गुरुत्वाकर्षण, सूरत अल-राद: 3, एसिड रैन सूरत अल-वाक़िया: 71, जल चक्र, अल-ज़ारियात: 3 और ऐसी कई आयात हैं जो आंशिक रूप से विकास के सिद्धांत का समर्थन करती हैं। पवित्र कुरआन ने ख़ुदा के मौजूद होने के बारे में वैज्ञानिक तर्कों का ढेर लगा दिया है। कुरआन ने अल्लाह के तर्कों को फैला दिया है। आकाश में और समुद्र के तल में, सूर्य और चंद्रमा में और रेत के कणों में।

ख़ुदा की उपस्थिति का प्रमाण आप में से प्रत्येक अहमदी है जिसने व्यक्तिगत रूप से दुआ की स्वीकृति का अनुभव किया है। यह जमाअत ख़ुदा की उपस्थिति का प्रमाण है। हर पैगंबर की एक जमाअत ऐसी होती है जो एक बच्चे जितनी कमज़ोर होने के बावजूद दुनिया की सभी शक्तियों को हरा देती है।

बस देखने वाली आंख की जरूरत है। ख़ुदा का प्रमाण हर जगह है। सूरह अल-हदीद आयत 5 में अल्लाह तआला फरमाता है: "आप जहां भी हों वह आपके साथ होता है।" लेकिन लगभग 25 वर्षों की सांसारिक शिक्षा के बाद, यह अफ़सोस की बात है कि हम बड़े हो जाते हैं या शायद हमारा अहंकार बड़ा हो जाता है। जिस ओर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ने उद्घाटन भाषण में हमारा ध्यान आकर्षित किया। हम बच्चों की तरह रोने के बजाय कुछ वयस्कों की तरह बहस करने लगते हैं। और कुछ युवाओं को, आधा विज्ञान पढ़ने के बाद, एहसास होता है कि उन्हें अब अपने वास्तविक निर्माता की आवश्यकता नहीं है। क्वांटम भौतिकी के संस्थापकों में से एक वर्नर हाइजेनबर्ग इसके बारे में कहते हैं।

"प्राकृतिक विज्ञान के गिलास का पहला घूंट आपको नास्तिक बना देगा, लेकिन गिलास के तल पर ख़ुदा आपका इंतज़ार कर रहा है।"

विज्ञान के गिलास से पहला घूंट पीने के बाद कुछ लोग सवाल करते हैं कि अगर यह ब्रह्मांड ख़ुदा ने बनाया है, तो वह ख़ुदा कहां है? हम वैज्ञानिक प्रयोगों की तरह क्यों नहीं दिखते? यह वैसा ही है जैसे मां के गर्भ में बच्चा पूछ रहा हो कि मेरी मां कहां है? क्यों नहीं देखते? हालाँकि माँ हर जगह है। जैसे इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पेक्ट्रम की किरणें हमारे चारों तरफ फैली हुई हैं लेकिन क्या आप जानते हैं कि इंसान की आंखें इन एक हज़ार किरणों में से नौ सौ छियानवे किरणों को नहीं देख सकती हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "जो कोई ख़ुदा की महिमा देखना चाहता है उसे दुआ करनी चाहिए।" इन आँखों से नहीं देखा जाता, दुआ की आँखों से देखा जाता है।

यह ख़ुदा को देखने का विज्ञान है।

कुछ लोग विज्ञान का एक घूंट पी कर यह भी कहते हैं कि यदि संसार अल्लाह तआला ने बनाया है, तो अल्लाह तआला को किसने बनाया? यह वैसा ही है जैसे कोई कहे कि अहमद ने इस कमरे को रंगा

है, तो अहमद को किसने रंगा? यह अजीब है। इसे "श्रेणीगत गलती" कहा जाता है यानी किसी चीज़ को गलत श्रेणी में वर्गीकृत करना। ख़ुदा हमारी तरह पदार्थ से नहीं बना है। यह सूक्ष्म है। (अल-अनाम: 104) हम इस महान आध्यात्मिक रहस्य को एक संकीर्ण वैज्ञानिक दायरे में नहीं समझ सकते।

बात यह है कि कुछ युवा पीढ़ी भी नास्तिकता की ओर रुख करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि यह मार्ग उन्हें स्वतंत्रता प्रदान करता है। न नमाज़ की ज़रूरत, न क़ुरान की ज़रूरत। पर्दे या शराब की कोई चिंता नहीं। आप जो चाहे करें। वे सोचते हैं कि मैं किसी अदृश्य प्राणी का गुलाम क्यों बनूं? मैं आज़ाद हूं। अच्छा? आप स्वतंत्र हैं? यदि आप विचार करें तो अल्लाह को झुठलाने वाले सबसे बुरे और सबसे बड़े गुलाम हैं। फेसबुक लाइक्स के गुलाम, यूट्यूब व्यूज के गुलाम, रीट्वीट के गुलाम, संपत्ति के गुलाम, बॉस की खुशी के गुलाम, खुद के गुलाम, फिल्म अभिनेताओं, गायकों, कलाकारों के गुलाम। जैसा कि सत्ताईस साल पहले जलसा सालाना बर्तानिया में हज़रत खलीफतुल-मसीह चतुर्थ ने फरमाया था: "वह इंसान जिस ने किसी न किसी को ज़रूर पूजना है जब वह ख़ुदा की पूजा नहीं करता है, तो उसके प्रिय अत्यंत अपमानित हो जाते हैं। ख़ुदा पर विश्वास रखने वाले इन झूठे देवताओं से तो बचे रहते हैं"

हम ख़ुदा को सांसारिक वैज्ञानिक तर्कों के माध्यम से समझ सकते हैं, लेकिन कांच के तल तक पहुंचने के लिए, ख़ुदा को देखने और अनुभव करने के लिए, "ख़ुदा है" के बिंदु तक पहुंचने के लिए, हमें दुआ के विज्ञान की आवश्यकता है। हाँ! आपने सही सुना। दुआ का विज्ञान। क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा दिखाए गए दुआओं के असंख्य चमत्कार किसी विज्ञान से कम नहीं हैं। देखिये विज्ञान अवलोकन, प्रयोग और परिणाम का नाम है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथियों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं की स्वीकृति के बारे में कई अवलोकन और अनुभव किए। एक बार हैदराबाद दक्कन से एक लड़का अब्दुल करीम क़ादियान पढ़ने आया तो उसे एक पागल कुत्ते ने काट लिया, अब्दुल करीम को रेबीज़ हो गया। क़ादियान से तीन सौ किलोमीटर दूर कसौली में रेबीज़ के इलाज के लिए प्रसिद्ध अस्पताल पाश्चर सेंटर था जहां हर साल लगभग बीस हज़ार रेबीज़ रोगियों का इलाज किया जाता था। वहां निदान और इलाज के बावजूद, जब अब्दुल करीम में बीमारी के लक्षण दिखे, तो पाश्चर केंद्र को फिर से एक तार भेजा गया, और जवाब आया:-

Nothing can be done for Abdul kareem.

अर्थात "हमें अफसोस है कि अब्दुल करीम के लिए कुछ नहीं किया जा सका।"

लौकिक विज्ञान ने उत्तर दे दिया। लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते है: "तब मेरा दिल उसके लिए बड़े दर्द और बेचैनी से भर गया।" (परिशिष्ट हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ाइन, खंड 22, पृष्ठ 480)

अपनी दर्दभरी दुआओं के माध्यम से, अल्लाह तआला ने न केवल अब्दुल करीम को चमत्कारिक ढंग से ठीक किया, बल्कि मृत्यु के कगार पर खड़े अब्दुल करीम अगले 28 वर्षों तक जीवित रहे। ख़ाकसार को अल्लाह ने जटिल संक्रामक रोगों से पीड़ित 25,000 से अधिक रोगियों का इलाज करने का सौभाग्य दिया। मैं आपको पूरे विश्वास के साथ बता सकता हूं कि 100 साल बाद भी अगर किसी बिना टीकाकरण

वाले व्यक्ति में रेबीज़ के लक्षण दिखते हैं, तो मृत्यु 100% निश्चित है। जिन साहबा ने अब्दुल करीम के चमत्कारिक रूप से ठीक होने का अवलोकन किया होगा, क्या आपको लगता है कि उन्हें अल्लाह तआला के बारे में किसी अन्य तर्क की कोई आवश्यकता पड़ी होगी? यदि यह एक घटना थी, तो वे कह सकते थे कि यह एक संयोग था, लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अकेले 'हकीकतुल वह्यी' पुस्तक में 200 से अधिक निशान वर्णन कर दिए हैं। आप (अ.स.) इस बारे में दुनिया को एक कड़ी चुनौती जारी करते हुए इसका उल्लेख करते हैं :

यदि कोई शरारत और चालाकी से इस चमत्कार में मेरा मुकाबला करे और यह मुकाबला कुर्रा अंदाज़ी से बीस मरीज मेरे हवाले किए जाएँ और बीस मरीज उसके हवाले किए जाएँ तो ख़ुदा तआला उन बीमारों को जो मेरे हिस्से में आएंगे उन को दूसरे पक्ष के बीमारों से अधिक ठीक करेगा। और यह स्पष्ट चमत्कार होगा। इस परिदृश्य में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दुआ की स्वीकार्यता को बिलकुल उन्हीं चरणों से गुज़ार रहे हैं जिनसे हम चिकित्सा विशेषज्ञ एक नए उपचार के लिए गुज़रते हैं। इसके तीन चरण हैं :

1.रैंडमाइजेशन, 2.परिणाम उपाय, 3.सांख्यिकीय विश्लेषण

यह बात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कह रहे हैं, लेकिन अंतर यह है कि दुनिया के विज्ञान का पालन करने से केवल उपचार प्राप्त होता है, जबकि इस विज्ञान का पालन करने से जीवित ख़ुदा भी मिलता है। दुआ का यह विज्ञान इतना विश्वसनीय है कि आपके दासों को भी जीवित ख़ुदा का अनुभव हुआ।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के समय में एक अहमदी बुज़ुर्ग थे जो अपनी दैनिक आय का आठवां हिस्सा अपनी दैनिक जरूरतों के लिए रखते थे और बाकी सब दान में भेज देते थे। एक दिन उसे 300 रुपये मिले। उन्हें लगा कि रकम कुछ ज्यादा है। छह महीने की सुविधा के लिए आज ही 90 रुपये क्यों न रख लें। इस दिन, लोग कहते हैं कि उस दिन जब उन्होंने मस्जिद से ज़ुहर की नमाज़ पूरी की, तो वे तुरंत घर चले गए, जो उनकी सामान्य आदत नहीं थी। किसी ने पूछा इतनी जल्दी क्या है? वे कहते हैं, मुझे नमाज़ में एक आवाज़ आई, "हुन मैं छह महीने लई तेरा रब नई रिहा।" अर्थात अब मैं छह महीने के लिए तेरा रब नहीं रहा?" और वे कहते हैं, मैं उसी समय घर जाकर अपनी एक अठन्नी रखूँगा और बाकी सारे पैसे चंदे में भेज दूंगा।

दूर क्यों जाएँ? इंशा अल्लाह कल आप और मैं हज़रत खलीफतुल मसीह के हाथों आलमी बैअत में ख़ुदा का जीवित प्रमाण नहीं देखेंगे?

हमें अपने बच्चों को बताना होगा कि अहंकार का मार्ग विज्ञान का मार्ग नहीं है, बल्कि अहंकार का मार्ग है।

इस अहंकार की ओर इशारा करते हुए, हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फरमाया था कि रिचर्ड डॉकिन्स को पवित्र कुरआन और इस्लामी दर्शन के वॉल्यूम कमेंट्री का अंग्रेजी अनुवाद भेजा था। लेकिन उन्होंने कहा कि आप मेरी किताब पढ़ें। मुझे आपकी पुस्तकों की आवश्यकता नहीं है।

रिचर्ड डॉकिन्स, सैम हैरिस, क्रिस्टोफर हिचेन जैसे तथाकथित दार्शनिक विज्ञान के गिलास से कुछ घूंट पीते हैं और अपने अहंकार और शेखी बघारने को ज्ञान कहते हैं। उनके लिए, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा:

आवाज़ आ रही है यह फोनोग्राफ से
ढूंडो ख़ुदा को दिल से, न लाफ व गज़ाफ़ से

विज्ञान के गिलास के तल तक की यात्रा एक लंबी यात्रा है। शोध से पता चलता है कि आज एक अच्छे वैज्ञानिक को एक बड़ी वैज्ञानिक सफलता हासिल करने में 20-25 साल लग जाते हैं।

इसी तरह हम और हमारे बच्चे भी 20 से 25 साल स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में बिताते हैं। आज दुआ की साइंस का सर्वोच्च विश्वविद्यालय ख़िलाफ़त है। सवाल यह है कि क्या 20 से 25 वर्षों तक इतनी ही मेहनत और सच्चाई से हमने इस विश्वविद्यालय की सेवा भी की है? क्या इससे भी लाभ प्राप्त किया है? क्या हमारा यह उम्मीद करना उचित है कि हम और हमारे बच्चे डिग्री पाने के लिए 25 साल तक कड़ी मेहनत करें लेकिन जीवित ख़ुदा को पाने के लिए 25 दिन भी रो रो कर दुआएं न करें? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "अल्लाह तआला के फ़ज़ल और कर्म का दूध भी एक रोने और गिड़गिड़ाने को चाहता है रोने और तड़पने को चाहता है। इसलिए उसके सामने एक रोती हुई आँख पेश की जानी चाहिए।"

महान पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो एक अनाथ बच्चे के रूप में पैदा हुए थे, जिनकी मां ने उन्हें छह साल की उम्र में छोड़ दिया था, उन्होंने हिरा नामी गुफा के अंधेरे में किस पीड़ा से दुआ की होगी, किस दिल से उन्होंने ख़ुदा को तलाश किया होगा कि वह ख़ुदा स्वयं उनके पास पहुँच गया। कई वर्षों के बाद, जब हज़रत अब्दुल्ला बिन ज़ुबैर ने कहा, "मैंने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा जब वह नमाज़ पढ़ रहे थे " उनके रोने के कारण उसकी छाती से हांडी में पानी उबलने जैसी आवाज़ आ रही थी।

आपके सच्चे ग़ुलाम ने भी अपने हृदय से ख़ुदा को तलाश किया। एक सहाबी हज़रत मौलाना अब्दुल करीम साहब सियालकोटी बताते हैं कि प्लेग के दिनों में एक रात मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एक उबलती हुई हँडिया के समान सजदे में रोते हुए देखा। जब मैं करीब गया तो सुना कि आप दुआ कर रहे थे कि ऐ अल्लाह दुनिया को इस ताऊन के अज़ाब से बचा ले।

अब करना क्या है? देखें बातें करने से कोई फायदा नहीं होगा। हज़रत खलीफतुल मसीह ने हमारे लिए जो रास्ते बताए हैं, अगर हम उन पर नहीं चलते तो भाषण निरर्थक हैं। अब हमें दो काम करने हैं। पहला काम यह है कि चाहे हम कितने भी बूढ़े क्यों न हो जाएं, हमें ख़ुदा के सामने एक कमजोर, विनम्र बच्चे के रूप में उपस्थित होना है। अपनी कहानी याद रखनी होगी, भूलनी नहीं है। जब बचपन में हमें भूख लगती थी तो हमें मां पर शक नहीं होता था। बहस तो नहीं करते थे उसकी उपस्थिति से इनकार नहीं करते थे और खूब रोते थे और ज़ोर से रोते थे। हम में अपनी मां तक पहुंचने की ताकत नहीं थी लेकिन वह हमारी पुकार सुनकर हम तक पहुंच जाती थी। और चने के आकार का माँ की दया के स्रोत, पिट्यूटरी

ग्रंथि के बराबर था परन्तु अल्लाह तआला की दया अनंत है और वह कहता है: ला तुद्रिकुहुल-अबसार व हुवा युद्रिकुल-अबसार। (अल-अनआम: 104) "आँखें उस तक नहीं पहुँच सकतीं, लेकिन वह आँखों तक पहुँचता है।"

नमाज़ में रो-रोकर दुआएं मांगनी चाहिए। यदि आवश्यक हो तो स्वयं इस्तिखारा भी करना होता है। क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं: "दुआ का स्वीकार होना ख़ुदा के अस्तित्व का एक शक्तिशाली प्रमाण है"। कालेज की साइंस पर हम जितना समय देते हैं अगर दुआ की साइंस पर भी दें तो ख़ुदा के मौजूद होने के सारे प्रश्न हल हो जाएं।

दूसरा काम यह है कि अपने बच्चों को अपने उदाहरण से सांसारिक ज्ञान के साथ नमाज़ और कुरआन की ओर बुलाएं। बच्चो! आइए इस क्रिकेट मैच से पहले नमाज़ पढ़ लें। इस नेटफ्लिक्स शो को शुरू करने से पहले कुरआन की तिलवात कर लेते हैं। ध्यान रखें कि ईसाई धर्म से धर्म परिवर्तन करने वालों और इस्लाम से धर्म परिवर्तन करने वालों के बीच बहुत स्पष्ट अंतर है।
जब ईसाई बाइबल को ध्यान से पढ़ते हैं, तो वे नास्तिकता की ओर चले जाते हैं। और जब मुसलमान कुरआन को ध्यान से नहीं पढ़ते तो वे नास्तिकता की ओर अग्रसर हो जाते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि भले ही विज्ञान हज़ार गुना भी विकसित हो जाए, लेकिन वह कुरआन पर हावी नहीं हो सकता।

अगर, एक मेहनती वैज्ञानिक की तरह, हमें कई वर्षों तक इन बुनियादी बातों का अभ्यास करने का अवसर मिल जाए, ये बातें जिनकी ओर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हमें लंबे समय से बुला रहे हैं तो, अल्लाह की कृपा से, शायद हमें वह स्थान दिया जाएगा जिसके बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि॰ ने फरमाया था, "कि आइए हम ख़ुदा के हो जाएं और ख़ुदा हमारा हो जाए, हम ख़ुदा को देखें और दुनिया हम में ख़ुदा को देखे" फिर, ख़ुदा ने चाहा तो हमें बार-बार नास्तिकों से बहस करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। क्योंकि अहमदियत का मकसद दिमागों को हराना नहीं बल्कि दिलों को जीतना है।

ये रास्ता लम्बा है ये रास्ता संकरा है लेकिन यही एक रास्ता है। हमने निराश नहीं होना। इसलिए अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आशापूर्ण शब्दों पर इस चर्चा को समाप्त करते हैं। हुज़ूर फरमाते हैं "जब एक बच्चा भूख से बेताब होकर दूध के लिए रोता और चिल्लाता है, तो मां के स्तन में दूध जोश मारकर आ जाता है। बच्चा तो दुआ का नाम भी नहीं जानता, पर उसकी चीखें दूध को कैसे खींच लाती हैं? क्या हमारी चीखें और हमारा रोना जब हम अल्लाह तआला के सामने हो, तो क्या वह कुछ भी खींच कर नहीं ला सकता? आता है और सब कुछ आता है परन्तु आँखों के अंधे जो नीतिज्ञ और दार्शनिक बने बैठे हैं वे देख नहीं सकते।

ढूंडो ख़ुदा को दिल से, न लाफ व गज़ाफ़ (ख़ुदग़रज़ी) से।।

(भाषण जलसा सालाना यू॰के 2023 के अवसर पर)

★ ★ ★

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

अरबईन नम्बर-4

संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमात, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी की कलम से

अनुवादक : फरहत अहमद आचार्य

इस बारे में मेरे एक मित्रने अपनी नेक नीयत से यह बहाना प्रस्तुत किया था कि आयत لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا (अलहाक़्क़ाह : 45) में केवल आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) सम्बोधित हैं। इस से क्यों कर समझा जाए कि यदि कोई दूसरा व्यक्ति झूठ बांधे तो वह भी मार दिया जाएगा। मैंने इसका यही उत्तर दिया था कि ख़ुदा तआला का यह कथन सिद्ध करने के स्थान पर है और नुबुव्वत की सच्चाई के प्रमाणों में से यह भी एक प्रमाण है और ख़ुदा के कथन का सत्यापन तभी होता है कि झूठा दावा करने वाला मारा जाए अन्यथा यह कथन इन्कारी पर कुछ प्रमाण नहीं हो सकता और न उसके लिए तर्क हो सकता है अपितु वह कह सकता है कि आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का तेईस वर्ण तक न मरना इस कारण नहीं कि वह सच्चा है अपितु इस कारण है कि ख़ुाद पर झूठ बांधना ऐसा पाप नहीं है जिस से ख़ुदा इसी संसार में उसे मार दे क्योंकि यदि यह कोई पाप होता और अल्लाह का नियम इस पर लागू होता कि झूठ बांधने वाले को इसी संसार में दण्ड देना चाहिए तो इसके लिए उदाहरण होने चाहिए थे तथा तुम स्वीकार करते हो कि इसका कोई उदाहरण नहीं अपितु ऐसे बहुत से उदाहरण मौजूद हैं कि लोगों ने तेईस वर्ष तक वरन् इस से अधिक ख़ुदा पर झूठ बांधे और तबाह नहीं हुए। अत: अब बताओ इस आरोप का क्या उत्तर होगा? यदि कहो कि शरीअत लाने वाला झूठ गढ़ के तबाह होता न कि प्रत्येक झूठ गढ़ने वाला। अत: प्रथम तो यह दावा प्रमाणहीन है। ख़ुदा ने झूठ बांधने के साथ शरीअत की कोई क़ैद नहीं लगाई। इसके अतिरिक्त यह भी तो समझो कि शरीअत क्या वस्तु है जिसने अपनी वह्यी के माध्यम से कुछ आदेश और कुछ निषेध वर्णन किए और अपनी उम्मत के लिए एक क़ानून निर्धारित किया वही शरीअत लाने वाला हो गया। अत: इस परिभाषा के अनुसार भी हमारे विरोधी दोषी हैं क्योंकि मेरी वह्यी में आदेश भी[1]★ है और निषेध भी। उदाहरणतया यह इल्हाम :

فَل للمؤمنين يغضوا من ابصارهم و يحفظوا فروجهم زالك از كى لهم۔

इसका उल्लेख बराहीन अहमदिया में है और इसमें आदेश भी है और निषेध भी और इस पर तेईस

★ चूंकि मेरी शिक्षा में आदेश भी है और निषेध भी और शरीअत के आवश्यक आदेशों का नवीनीकरण है। इसलिए ख़ुदा तआला ने मेरी शिक्षा को और मुझ पर होने वाली वह्यी को फुल्क अर्थात् कश्ती की संज्ञा दी जैसा कि ख़ुदा के एक इल्हाम की यह इबारत है-

واصنع الفلك باعيننا و وحينا ان الذين يبايعونك انما يبايعون الله يد اللّٰ فوق ايديهم۔

अर्थात् शिक्षा और नवीनीकरण की किश्ती को हमारी आँखों के सामने और हमारी वह्यी से बना। जो लोग तुझ से बैअत करते हैं वे ख़ुदा से बैअत करते हैं। अब देखो ख़ुदा ने मेरी वह्यी और मेरी शिक्षा और मेरी बैअत को नूह की कश्ती (नौका) ठहराया और समस्त लोगों के लिए उसे मुक्ति का आधार ठहराया। जिसकी आँखे हों देखे जिसके कान हों सुने। इसी से।

वर्ष की अवधि भी गुज़र गई। इसी प्रकार अब तक मेरी वह्यी में आदेश होते हैं और निषेध भी। यदि कहो कि शरीअत से वह शरीअत अभिप्राय है जिसमें नवीन आदेश हों तो यह असत्य है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: اِنَّ هٰذَا لَفِی الصُّحُفِ الْاُوْلٰی۔ صُحُفِ اِبْرٰهِیْمَ وَمُوْسٰی

(सूरह अलआ'ला :19, 20)

अर्थात् क़ुर्आनी शिक्षा तौरात में मौजूद है और यदि यह कहो कि शरीअत वह है जिस में पूर्ण रूप से आदेश और निषेध का वर्णन हो तो यह भी मिथ्या क्योंकि यदि तौरात या क़ुर्आन करीम में पूर्ण रूप से शरीअत के आदेशों का वर्णन होता तो फिर अपनी बुद्धि द्वारा विचार करके कोई परिणाम निकालने की गुंजायश न रहती। अत: यह सब विचार व्यर्थ अदूरदर्शिता हैं। हमारा ईमान है कि आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ख़ातमुल अंबिया हैं तथा क़ुर्आन ख़ुदाई किताबों का ख़ातम है तथापि ख़ुदा तआला ने अपने ऊपर यह अवैध नहीं किया कि नवीनीकरण के तौर पर किसी अन्य मामूर के माध्यम से यह आदेश जारी करे कि झूठ न बोलो, झूठी गवाही न दो, दुराचार न करो, हत्या न करो। स्पष्ट है कि इस प्रकार वर्णन करना शरीअत का बयान है जो मसीह मौऊद का भी काम है फिर तुम्हारा वह तर्क कैसा बरबाद हो गया कि यदि कोई शरीअत लाए और झूठ बांधने वाला हो तो वह तेईस वर्ष तक जीवित नहीं रह सकता। स्मरण रखना चाहिए कि ये समस्त बातें व्यर्थ और लज्जनीय हैं। जिस रात मैंने अपने उस मित्र को ये बातें समझाईं तो उसी रात मुझ पर ख़ुदा तआला की ओर से वह अवस्था छा गई जो अल्लाह की वह्यी के समय मुझ पर छाती है और वार्तालाप का वह दृश्य पुन: दिखाया गया और फिर इल्हाम हुआ قل انَّ هُدَی اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰی अर्थात् ख़ुदा ने मुझे जो इस आयत لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا के बारे में समझाया है वही अर्थ सही हैं। तब इस इल्हाम के पश्चात् मैंने चाहा कि पहली किताबों में से जो भी कुछ उदाहरण खोजूं। तब ज्ञात हुआ कि सम्पूर्ण बाइबल उन उदाहरणों से भरपूर है कि झूठे नबी तबाह किए जाते हैं। अत: मैं उचित समझता हूँ कि उन उदाहरणों में से कुछ उदाहरणों का यहाँ उल्लेख करूं ताकि पाठकगण इस से लाभान्वित हों और वे यह हैं-

तौरात और अन्य पूर्वकालीन आकाशीय किताबों की झूठे नबियों से संबंधित भविष्यवाणियाँ

तौरात में लिखा है कि यदि तुम्हारे मध्य कोई नबी या स्वप्न देखने वाला प्रकट हो तथा कोई निशान और चमत्कार न दिखाए तथा उस निशान या चमत्कार के अनुसार जो उसने तुम्हें दिखाया बात घटित हो और वह तुम्हें कहे आओ हम ग़ैर उपास्यों का जिन्हें तुम ने नहीं जाना अनुसरण करें (अर्थात् ख़ुदा के अतिरिक्त किसी अन्य का आदेश मनवाना चाहें अथवा अपनी ही अनुसरण उन बातों में कराना चाहे जो तौरात के विपरीत हैं) तो उस नबी या स्वप्न देखने वाले की बात पर कान न धरो कि ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारी परीक्षा लेता है ताकि मालूम करे कि तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा को अपने पूर्ण तन और मन से मित्र समझते हो कि नहीं। चाहिए कि तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा का अनुसरण करो (अर्थात् उसी के निर्देशनों के अनुसार

आचरण करो, दूसरा व्यक्ति चाहे कोई दार्शनिक या फ़्लास्फ़र हो उसकी बात न मानो) और उस से डरो तथा उसके आदेशों को कंठस्थ करो और उसकी बात मानो, तुम उसी की उपासना करो और उसी से संलग्न रहो और वह नबी या स्वप्न देखने वाला क़त्ल किया जाएगा। देखो तौरात इस्तिस्ना अध्याय-13, आयत 1 से 5 तक। इस भविष्यवाणी की व्याख्या यह है कि जिस नबी ने तुम्हें ख़ुदा के अनुसरण से विमुख करना चाहा और अन्य विचारों का अनुयायी बनाना चाहा जो ख़ुदा की ओर से नहीं हैं वह क़त्ल किया जाएगा। स्मरण रहे कि तौरात की इस भविष्यवाणी में ये शब्द नहीं हैं कि झूठा नबी तब क़त्ल किया जाएगा जब यह शिक्षा दे कि ख़ुदा के अतिरिक्त उपास्यों को सज्दह करो अथवा उनकी बन्दगी करो अपितु ये शब्द है कि ग़ैर का अनुकरण कराना चाहे अर्थात् तौरात की शिक्षा के विपरीत दूसरे विचारों पर चलाना चाहे जो किसी अन्य के विचार हैं न कि ख़ुदा के तब ख़ुदा उसे मार देगा क्योंकि वह ख़ुदा की इच्छा के विपरीत शिक्षा देता है।

फिर तौरात में यह इबारत है-

"परन्तु वह नबी जो ऐसी धृष्टता करे कि कोई बात मेरे नाम से कहे जिसके कहने का मैंने आदेश नहीं दिया तो वह नबी क़त्ल किया जाए।"

इस आयत में ख़ुदा तआला ने स्पष्ट तौर पर फ़रमा दिया कि झूठ बनाने का दण्ड ख़ुदा के निकट क़त्ल है और पहली आयतों में वर्णन हो चुका है कि ख़ुदा स्वयं उसे क़त्ल करेगा और वह कदापि नहीं बचेगा। (देखो तौरात इस्तिस्ना अध्याय-18, आयत-20)

फिर हिज़्कील नबी की किताब में झूठे नबियों के बारे में यह इबारत है-

ख़ुदावन्द यहूदा यों कहता है कि बेहूदा नबियों पर शोर है जो अपनी रूह का अनुसरण करते हैं और उन्होंने कुछ नहीं देखा। वे धोखा देकर कहते हैं कि ख़ुदावन्द कहता है कि यद्यपि ख़ुदावन्द ने उन्हें नहीं भेजा। बोलते हो (हे झूठे नबियों) कि ख़ुदावन्द ने कहा यद्यपि मैंने नहीं कहा। इसलिए ख़ुदावन्द यहूदा यों कहता है कि तुम ने झूठ कहा है और ख़ुदावन्द यहूदा कहता है कि मैं तुम्हारा विरोधी हूँ और मेरा हाथ उन नबियों पर चलेगा जो धोखा देते हैं (अर्थात् जिन्हें शुद्धता से कोई कशफ़ नहीं होता और अपनी ओर से विश्वास कर बैठे हैं कि यह ख़ुदा का कलाम है हालांकि वह ख़ुदा का कलाम नहीं) और जानते हैं कि विश्वास के कारण उपलब्ध नहीं परन्तु फिर भी झूठी परोक्ष की बातें जानने का दावा करते हैं वे तबाह किए जाएंगे क्योंकि धृष्टता करते हैं। अत: मैं हे झूठे नबियों ! उस दीवार को जिस पर तुम ने कच्ची कहगल की है तोड़ डालूंगा और पृथ्वी पर गिराऊंगा, यहां तक कि उसकी नींव प्रकट हो जाएगी। हाँ वह गिरेगी और तुम उसके बीच में तबाह होगे।

(हिज़्कील अध्याय-13, आयत 3 से 14 तक)

फिर यसइयाह नबी की किताबें इसी का समर्थन हैं। उसकी इबारत यह है-

ख़ुदावन्द इस्राईल के सर और पूंछ में शाख़ और नै को एक ही दिन में काट डालेगा और जो नबी झूठी बातें सिखाता है वही पूंछ है। (यसइयाह अध्याय-9, आयत 5)

इसी प्रकार यरमियाह नबी की किताब में झूठे नबियों के बारे में यह वर्णन है-

"रब्बुलअफ़वाज (सेनाओं का सेनापति) नबियों के संबंध में (अर्थात् झूठे नबियों के संबंध में) यों कहता है कि देख मैं उन्हें नागदौना खिलाऊंगा और हलाहल अर्थात् घातक विष का पानी पिलाऊंगा, क्योंकि यूरोशलम के नबियों के कारण समस्त संसार में अधर्म फैल गया है। देख ख़ुदावन्द के प्रकोप से एक आंधी उसकी ओर (अर्थात् यूरोशलम की ओर) चलेगी, एक चक्कर मारता हुआ तूफ़ान उद्दण्डों के सर पर (झूठे नबियों के सर पर) पड़ेगा। मैंने उन नबियों को नहीं भेजा परन्तु वे दौड़े हैं। मैंने उन से नहीं कहा परन्तु उन्होंने नुबुव्वत की।"

(देखो यरमियाह अध्याय-23 आयत 5 से 21 तक)

इसी प्रकार ज़करिया नबी की किताब में झूठे नबियों के बारे में यह वर्णन है-

"मैं नबियों को (अर्थात् झूठे नबियों को) और अपवित्र रूहों को संसार से बहिष्कृत कर दूँगा और ऐसा होगा कि जब कोई नुबुव्वत करेगा तो उसके माता-पिता उसे कहेंगे कि तू न जिएगा, क्योंकि तू ख़ुदावन्द का नाम लेकर झूठ बोलता है (अर्थात् चूंकि झूठे नबियों को ख़ुदा तबाह करेगा, इसलिए झूठी नुबुव्वत करने वालों के माता-पिता डरेंगे कि अब ये मरेंगे क्योंकि इन्होंने झूठ बोला) और उसके माता-पिता जिन से वह पैदा हुआ जिस समय वह भविष्यवाणी करेगा उसे धूल मारेंगे (अर्थात् कहेंगे कि क्या तू मरना चाहता है कि झूठी भविष्यवाणी करता है) और उस दिन ऐसा होगा कि नबियों में से प्रत्येक जिस समय वह नुबुव्वत करे (अर्थात् झूठी नुबुव्वत करे) अपने स्वप्न से लज्जित होगा और वे कभी बाल वाले लिबास न पहनेंगे ताकि धोखा दें अपितु एक-एक कहेगा कि मैं नबी नहीं हूँ किसान हूँ।"

(देखो ज़क़रिया अध्याय-13 आयत 2 से 5)

ऐसा ही इंजील 'आमाल' में झूठे नबियों के संबंध में यह इबारत है-

"हे इस्राईली पुरुषों ! स्वयं सावधान रहो कि तुम उन लोगों के साथ क्या चाहते हो क्योंकि उन दोनों के आगे थ्योडास ने उठकर कहा कि मैं कुछ हूँ (अर्थात् नुबुव्वत का झूठा दावा किया) और लगभग चार सौ पुरुष उस से मिल गए। वह मारा गया और जितने उस के अधीन थे तबाह तथा बरबाद हुए। तत्पश्चात् यहूदा जलीदी नाम लिखने के दिनों में उठा (अर्थात् उसने भी नुबुव्वत का झूठा दावा लिया) और बहुत से लोगों को अपनी ओर खींचा, वह भी तबाह हुआ और सब जितने उसके अनुयायी थे अस्त-व्यस्त हो गए तथा अब मैं तुम्हें कहता हूँ कि उन लोगों से अलग हो जाओ और उन्हें जाने दो क्योंकि यदि यह उपाय या कार्य मनुष्य से है तो नष्ट होगा और यदि ख़ुदा से है तो तुम उसे नष्ट नहीं कर सकते। ऐसा न हो कि तुम ख़ुदा से भी लड़ने वाले ठहरो।"

(आमाल अध्याय-5, आयत 35 से 40 तक) (... शेष)

★ ★ ★

पृष्ठ 6 का शेष, संपादकीय..

निर्दोष और निष्पाप ठहराया क्या बिगड़ सकता है उसको कुछ नुकसान नहीं पहुँचेगा। मगर इससे मुसलमानों के दिलों में ऐसा घाव हो जाता है कि कोई मरहम उसे ठीक नहीं कर सकता क्योंकि मुसलमान यह तो पसन्द कर लेंगे कि उनके सामने उनके बीवी-बच्चों को क़त्ल कर दिया जाए, उनकी धन-दौलत छीन ली जाए, उनकी गर्दनों पर कुन्द छुरी फेर दी जाए लेकिन यह कभी पसन्द न करेंगे कि उस रसूल को जिसके द्वारा उन्हें हिदायत मिली उसे कोई बुरा शब्द कहा जाए। अत: जो व्यक्ति आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गाली देता है इससे उसके मज़हब को या उसे कोई फ़ायदा नहीं पहुँच सकता लेकिन उसके इस काम से मुसलमानों को उससे और उसके सहपंथियों से नफ़रत अवश्य हो जाएगी जिसका परिणाम भयानक होगा। इसी तरह अगर मुसलमान श्री रामचन्द्र जी या श्रीकृष्ण जी को गालियाँ दें तो उन महापुरुषों को कोई नुकसान नहीं पहुँच सकता, मगर इससे यह नतीजा अवश्य निकलेगा कि उनके देशवासियों के दिलों पर ऐसी चोट लगेगी कि जिसको कोई मरहम ठीक नहीं कर सकेगा और मुसलमानों को ख़तरनाक नुकसान पहुँचेगा। अत: कटुता और दूसरे धर्मों और उनके बुज़ुर्गों को गालियाँ देना या उनकी आलोचना करना एक ऐसा ख़तरनाक काम है कि जिसका अंजाम कभी अच्छा नहीं हो सकता। लेकिन सवाल यह है कि जो आदत इस समय हिन्दुस्तान के लोगों में पड़ चुकी है उसको कैसे दूर किया जाए? इसका जवाब यह है कि पलक झपकते ही इस काम का होना तो मुश्किल है। लेकिन मुश्किल काम से घबराना भी इन्सान का काम नहीं। इसलिए मेरे विचारानुसार इस समय इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक मज़हबी कान्फ्रेंस की जाए, जिसके जलसे साल में एक या दो बार हुआ करें। इन जलसों में विभिन्न धर्मों के अनुयायियों को अपने धर्म की विशेषताएँ बयान करने के लिए बुलाया जाए और दूसरे धर्मों पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हमला करने की कदापि अनुमति न हो।" (उद्धृत- पैग़ाम हज़रत मसीह मौऊद[अ.] पृष्ठ 31-32)

दुआ है कि हमारा देश खुशहाल रहे और हर प्रकार की नफरत तथा धार्मिक हिंसा से सुरक्षित रहे।

★ ★ ★

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

अनुवादक: सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ अतफ़ालुल अहमदिया जर्मनी की virtual मुलाक़ात दिनांक 29 नवंबर 2020 ई. में एक तिफ़्ल के इस प्रश्न पर कि आजकल के हालात की वजह से ग़ैर मुस्लिम, मुसलमानों से डरते हैं। हम उन्हें कैसे तसल्ली दे सकते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया :

उत्तर : हम तो हमेशा से ही कोशिश कर रहे हैं, पिछले कई सालों से कोशिश कर रहे हैं। इसी लिए मैं peace symposium भी करता हूँ। तुम लोगों को भी कहता हूँ कि peace symposium करो। peace के पमफ़लेट तक़सीम करो। लोगों को बताओ कि इस्लाम की असल तालीम क्या है। इस्लाम की असल तालीम तो प्यार और मुहब्बत की तालीम है। लोगों को बताओगे तो उनका डर दूर होगा। हमारी कोशिश जितनी ज़्यादा होगी उतनी लोगों में awareness ज़्यादा पैदा होगी, लोगों को इस्लाम के बारे में सही हालात का इल्म होगा। इसलिए हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को बताएं, अपने दोस्तों को बताएं। स्कूल में तुम्हारे दोस्त होंगे। उनको बताओ कि इस्लाम की असल तालीम क्या है। असल तालीम तो यह है कि प्यार और मुहब्बत। और इस्लाम किसी किस्म की जंग और जिहाद की इजाज़त नहीं देता बल्कि इस्लाम ने जहां जंग की इजाज़त दी है या जिहाद की इजाज़त दी है, वहां जब जिहाद करने का पहला हुक्म उतरा तो अल्लाह मियां ने क़ुरआन-ए-करीम में लिखा कि तुम्हें जिहाद की इसलिए इजाज़त दी जा रही है कि ये लोग तुम पर ज़ुल्म कर रहे हैं और अगर उनके ज़ुल्म को नहीं रोकोगे तो फिर न कोई चर्च बाक़ी रहेगा और न कोई यहूदियों का synagogue बाक़ी रहेगा, न कोई टेंपल बाक़ी रहेगा और न कोई मस्जिद बाक़ी रहेगी। तो इस्लाम ने अगर जिहाद की इजाज़त दी है तो मज़हब को secure करने के लिए दी है , मज़हब को महफ़ूज़ करने के लिए दी है। इस्लाम ने कहीं यह इजाज़त नहीं दी कि मज़हब फैलाने के लिए तुम्हें जिहाद करने और क़त्ल करने की इजाज़त है। इस्लाम तो कहता है कि अगर तुम देखो कि ईसाइयों के चर्च पर कोई हमला कर रहा है तो मुसलमान का फ़र्ज़ है कि जाए और ईसाइयों के चर्च को बचाए। इस्लाम कहता है कि अगर यहूदियों के synagogue पर कोई हमला कर रहा है तो तुम जाओ और यहूदियों के synagogue को बचाओ। इस्लाम कहता है कि हिंदूओं के टेंपल पर कोई हमला कर रहा है तो तुम जाओ और उसको बचाओ और इस तरह तुम अपनी मस्जिद को भी बचाओ। इस्लाम तो सबकी हिफ़ाज़त करता है। इसलिए लोगों को यह खुल के बताना पड़ेगा, अपने दोस्तों को बताओ कि क़ुरआन-ए-करीम में यह लिखा हुआ है। लोगों को यह बताओ कि ये लोग जो मुसलमान बने फिरते हैं, जो jihadist हैं या जो extremists हैं, ये जो शिद्दत-पसंद हैं ये ग़लत बातें फैला रहे हैं ये इस्लाम की तालीम नहीं फैला रहे। जब तुम बताओगे तो लोगों को पता लग जाएगा कि इस्लाम कितना अमन क़ायम

करने वाला और प्यार करने वाला मज़हब है। ठीक है?

सवाल- इसी मुलाक़ात में एक और बच्चे ने सवाल किया कि जब कोई मुसलमान फ़ौत होता है तो हम 'इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजेऊन' पढ़ते हैं। अगर कोई ग़ैर मुस्लिम फ़ौत हो तो क्या हम उसके लिए भी यह पढ़ सकते हैं या नहीं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न के जवाब में फ़रमाया-

उत्तर : अगर हमें उसका अफ़सोस है या वह ताल्लुक़ वाला है तो ज़ाहिर है इसी तरह पढ़ना है कि हम सारे अल्लाह के पास ही जाने वाले हैं। जाना तो सबने अल्लाह के हुज़ूर ही है। आगे अल्लाह ने उनसे कैसा सुलूक करना है यह तो अल्लाह बेहतर जानता है। हो सकता है कोई ग़ैर मुस्लिम भी हो लेकिन उसकी कोई नेकी अल्लाह को पसंद आ जाए तो उस को अल्लाह तआला माफ कर दे। या जो भी उस से सुलूक करना है वह करे। 'इन्ना लिल्लाहे.. इसलिए पढ़ा जाता है कि अगर कोई भी नुक़्सान हो तो उस का बदला देना, उस को पूरा करना अल्लाह तआला का काम है। तो हम यह पढ़ते हैं कि हम अल्लाह के लिए हैं और उसी की तरफ़ हर नुक़्सान पर और हर मामले में रुजू करते हैं। अगर हमारा कोई दोस्त है या हमारा कोई ऐसा हमदर्द है जिसने हमारे साथ नेकी की हो उसपे अगर हम यह दुआ दे देते हैं तो इस का मतलब यह है कि वह भी अल्लाह के पास गया और हमने भी अल्लाह के पास जाना है। इस की वजह से हमें जो नुक़्सान हुआ वह अल्लाह तआला पूरा करे और इस की किसी भी हरकत या बात पर कोई नेक सुलूक हो सकता है तो वह अल्लाह तआला इस से कर दे। असल चीज़ तो यह है कि इन्ना लिल्लाहे इस लिए पढ़ी जाती है कि हम अल्लाह से यह मांगते हैं कि हमारा नुक़्सान पूरा हो जाए। उस के मरने से हमें जो अफ़सोस है, हमारा सदमा है वह अल्लाह तआला दूर फ़रमाए क्योंकि हम अल्लाह के लिए हैं और हर मुआमले में अल्लाह की तरफ़ रुजू करते हैं। कोई भी नुक़्सान हो। जान का नुक़्सान हो या माल का नुक़्सान हो या किसी भी किस्म का नुक़्सान हो। किसी के मरने पर ज़रूरी नहीं है। किसी को कोई माली नुक़्सान भी हो। तुम्हारे पैसे ज़ाए हो जाएं तब भी तुम इन्ना लिल्लाहे पढ़ते हो। इसलिए कि हमने हर मुआमले में अल्लाह की तरफ़ ही जाना है। किसी पर इन्हेसार नहीं करना। तो इसलिए इन्ना लिल्लाहे पढ़ने में कोई हर्ज नहीं है। जिसको तुम जानते हो और वह तुम्हारा क़रीबी है और इस से तुम्हें लाभ भी पहुंचता है उस के फ़ौत होने से तुम अगर इन्ना लिल्लाहे पढ़ लो तो इस में कोई हर्ज नहीं। वैसे भी हर एक के लिए अल्लाह तआला से रहम मांग लेना चाहिए, सिवाए इस के कि कोई मुशरिक हो। मुशरिक यानी शिर्क करने वाला जो अल्लाह तआला के मुक़ाबला पर शिर्क करता है उसके लिए दुआ नहीं करनी। बाक़ी जो भी मज़हब को मानते हैं उन के लिए अल्लाह तआला से रहम की दुआ भी की जा सकती है। इस में कोई हर्ज नहीं।

प्रश्न : इसी virtual मुलाक़ात दिनांक 29 नवंबर 2020 ई. में एक और बालक ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला जब हमारी तक़दीर लिख देता है तो फिर हम दुआ क्यों करते हैं, हमें दुआ की क्या ज़रूरत होती है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : कुछ तक़दीरें ऐसी हैं जो टल नहीं सकतीं और कुछ तक़दीरें ऐसी हैं जो टल जाती हैं। इसलिए हम दुआ करते हैं। उदाहरणत: मौत है। हर एक ने मरना है, यह तो साबितशुदा है। कोई इन्सान हमेशा ज़िंदा नहीं रह सकता। यह अल्लाह तआला की तक़दीर है। लेकिन एक शख़्स बीमार होता है। और ऐसी हालत में वह पहुंच जाता है जहां डाक्टर जवाब दे देते हैं कि मरने के क़रीब पहुंच गया। लेकिन हम दुआ करते हैं और अल्लाह तआला दुआ क़बूल कर लेता है और उस को उस मौत के मुँह से वापिस ले आता है, ज़िंदा कर देता है। तो यह अल्लाह तआला की ऐसी तक़दीर है जो दुआ से टल गई। ultimately उसने एक लंबी उम्र सत्तर साल, अस्सी साल, नव्वे साल पा के मरना ही है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है :

गर सौ बरस रहा है आख़िर को फिर जुदा है

सो साल भी कोई ज़िंदा रहेगा आख़िर को मरना ही है। लेकिन एक ऐसी उम्र है उदाहरणत: जवानी में अगर किसी की उस वक़्त ऐसी मरने की हालत हो जाती है और हम दुआ करते हैं तो अल्लाह तआला उस को टाल देता और इस को उम्र लंबी कर दे देता है। और कई ऐसे वाक़ियात होते हैं। लोग मुझे भी दुआ के लिए लिखते हैं। मैं उनको जवाब देता हूँ। और अल्लाह के फ़ज़ल से वह दुआ क़बूल भी हो जाती है। लोग भी अपनी दुआ के वाक़ियात लिखते हैं। उन्होंने भी दुआ की और अल्लाह तआला ने दुआ से वे नुक़्सान जो उनको होना था इस से वह टाल दिया। तो अल्लाह तआला की तक़दीर से ही यह काम हो रहा है। लेकिन अगर हम दुआ नहीं करेंगे, कोशिश नहीं करेंगे तो फिर जो इस तक़दीर का नतीजा निकलना है वह निकलेगा। इस लिए हम दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला की जो तक़दीरें टलने वाली हैं वे टल जाएं और उनके बेहतर नतायज पैदा हो जाएं। अल्लाह तआला ने दो चीज़ें रखी हैं। एक फ़ायदे वाली, एक नुक़्सान वाली। अब अगर हम अल्लाह तआला की बात मान लेते हैं तो हमें फ़ायदे वाली तक़दीर लाभ दे देगी। तो कोशिश भी करते हैं और दुआ भी करते हैं। और अगर अल्लाह तआला की बात नहीं मानते। और इसके बारे में सही काम भी नहीं करते और दुआ भी नहीं करते तो इस तक़दीर का जो मनफ़ी पहलू है वह ज़ाहिर हो जाएगा। तो दो तक़दीरें होती हैं एक टलने वाली तक़दीर और एक न टलने वाली तक़दीर। न टलने वाली तक़दीर अल्लाह तआला के फ़ैसले हैं कि यह होना ही होना है। इस के लिए अल्लाह तआला दुआ नहीं सुनता और वह तक़दीर नहीं टलती। और जो टलने वाली तक़दीर है इस के बारे में अल्लाह तआला दुआओं से, इन्सान की कोशिश से उसको टाल देता है। इसलिए अल्लाह तआला ने कहा है कि तुम दुआ करो तो तुम्हारा मेरे से ताल्लुक़ भी पैदा होगा, तुम्हारा मुझ पर ईमान भी ज़्यादा होगा और फिर इसके नतीजे में तुम मज़ीद ईमान में और रूहानियत में बढ़ोगे और इस से फिर तुम्हें लाभ होगा। ठीक है?

प्रश्न : इसी virtual मुलाक़ात दिनांक 29 नवंबर 2020 ई. में एक और तिफ़्ल ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि कौरोना वायरस के ख़त्म होने के बाद दुनिया फिर से वैसे ही नॉर्मल हो सकती है जैसे पहले थी? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : यह तो अल्लाह तआला बेहतर जानता है। नॉर्मल हो जाएगी लेकिन कौरोना वायरस के बाद

दुनिया के जो आर्थिक हालात, economic हालात हो गए हैं इस का असर दुनिया पर पड़ेगा। और अगर आर्थिक लिहाज़ से कुछ न भी हो, अगर जंग न भी हो तब भी आर्थिक हालात को stable होते होते कई साल लग जाऐंगे। लेकिन उमूमन यही देखा गया है कि जब ऐसे हालात होते हैं तो मआशी हालात बिगड़ते हैं और फिर जंगों की सूरत भी पैदा होती है। और आजकल जो दुनिया की हालत है वह यह है कि जंगों के हालात पैदा हो रहे हैं। और अगर कौरोना वायरस के बाद जंग हो जाती है तो फिर और भी ख़तरनाक हालात हो जाऐंगे। और फिर उसको नॉर्मल होते होते भी कई साल लग जाऐंगे। इसलिए हमें यह दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला दुनिया को अक़्ल दे और जो दुनिया वाले हैं इस अर्से में दुनिया की तरफ़ झुकने और आपस में एक दूसरे के हुक़ूक़ मारने और ग़सब करने की बजाय अक़्ल करें, इनके लीडर अक़्ल करें और अमन और सुकून से रहने की कोशिश करें और आपस में इकट्ठे हो कर, दुनिया को एक रुख के कोशिश करें तो जल्दी दुबारा नॉर्मल हालात पैदा कर लेंगे। लेकिन अगर उन्होंने यह कोशिश न की तो फिर हालात नॉर्मल नहीं होंगे। फिर हालात नॉर्मल होते हुए कई साल लगेंगे और बड़ी ख़ौफ़नाक सूरत-ए-हाल पैदा होगी। वैसे मुझे लग रहा है कि कौरोना वायरस ख़त्म होने के बाद कहीं जंगों के हालात न शुरू हो जाएं। और फिर हालात नॉर्मल होते होते कई साल लग जाऐंगे। इसलिए हमें दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह न करे कि जंगों के हालात हों और जो दुनिया के लीडर हैं वह अक़्ल करें और यह कोशिश करें कि जल्दी से जल्दी नॉर्मल हालात क़ायम हो जाएं। लेकिन इसके लिए यही है कि अल्लाह की तरफ़ रुजू करना पड़ेगा। अगर अल्लाह की तरफ़ रुजू नहीं करेंगे तो फिर कोई और वबा, कोई और बला, कोई और चीज़ उन पर आएगी और फिर उनको मार पड़ेगी। तो जब तक यह लोग अल्लाह तआला की तरफ़ नहीं झुकते, अल्लाह के हुक़ूक़ अदा नहीं करते और उसके बंदों के हक़ अदा नहीं करते उस वक़्त तक हालात नॉर्मल नहीं हो सकते। इसलिए हम अहमदियों को भी ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करनी चाहिए, तब्लीग़ करनी चाहिए और लोगों को बताना चाहिए कि दुनिया के हालात नॉर्मल करने के लिए एक ही ईलाज है कि तुम अल्लाह तआला की तरफ़ झुको, अल्लाह तआला की तरफ़ वापस आ जाओ, अल्लाह तआला के हक़ अदा करने वाले बनो और उसके बंदों के हक़ अदा करने वाले बनो। ठीक है?

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ अत्फालुल अहमदिया जर्मनी की virtual मुलाक़ात दिनांक 29 नवंबर 2020 ई. में एक बालक के इस प्रश्न पर कि कोरोना वायरस के लिए जो आजकल टीका आया हुआ है क्या वह हमें लगवाना चाहिए या नहीं ? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस के जवाब में फ़रमाया :

उत्तर : अगर साबित हो जाए कि वह अच्छा ईलाज है और अगर गवर्नमेंट कहती है कि लगवाओ तो लगवा लो कोई हर्ज नहीं है। लेकिन पहले उसका लोगों को तजुर्बा तो हो जाए कि जिनको लगा है उनको लाभ भी होता है या नहीं। सिर्फ सुई चुभोने के लिए न टीका लगवा लो। अगर लाभ होता है तो ज़रूर लगवाना चाहिए, कोई हर्ज नहीं है। शेष..... (अखबार बदर के सौजन्य से)

★ ★ ★

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ○
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ○
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنۢبِتُ لَكُم بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ
(النحل ۱۱)
Prop : Sk. Ishaque
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FFT
Fruits
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu
Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger,
Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER
and
WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag,
Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورہ بنی اسرائیل آیت 31)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt,
Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

संकेतों को समझें और अपने गुर्दे को स्वस्थ रखें (गूगल के माध्यम से)

गुर्दे की बीमारी के कई शारीरिक संकेत हैं, लेकिन कभी-कभी लोग अन्य बीमारियों (क्योंकि उनकी कोई विशिष्ट लक्षण नहीं होती) के साथ उन्हें अनदेखा करते हैं या भ्रमित हो जाते हैं। इसलिए, इन लक्षणों पर नज़र रखनी चाहिए और बिना किसी देरी के पुष्टि करने के लिए परीक्षण करवाना चाहिए। हालांकि, अगर कोई व्यक्ति हाई ब्लड प्रेशर, शूगर, सीएडी से पीड़ित है, या गुर्दे की विफलता का पारिवारिक इतिहास है, या यहां तक कि अगर 60 वर्ष से अधिक की उम्र है, तो नियमित आधार पर गुर्दे का परीक्षण करवाना चाहिए।

जबकि गुर्दे की बीमारी के कुछ शुरुआती संकेत: टखनों, पैरों या टांगों में सूजन, आंखों के आसपास सूजन (पेरिऑर्बिटल एडिमा): यह कोशिकाओं या ऊतकों में तरल पदार्थ के निर्माण के कारण आंखों के आसपास सूजन या मोटा हो जाना है। आंखों के आस-पास की सूजन यह संकेत दे सकती है कि आपके गुर्दे शरीर में प्रोटीन को रखने के बजाय मूत्र में बड़ी मात्रा में इसका रिसाव कर रहे हैं।

बचने के उपाय : खूब पानी पिएं: यह आपके गुर्दे को स्वस्थ रखने का सबसे आम और सरल तरीका है। बहुत सारे तरल पदार्थ, विशेष रूप से पानी का सेवन, गुर्दे को शरीर से सोडियम, यूरिया और ज़हरीले पदार्थों को साफ करने में मदद करता है। कम सोडियम/नमक का सेवन करें। शुगर के स्तर को नियमित रखें, शुगर मरीज़ों के गुर्दे खराब होने का खतरा अधिक रहता है इसलिए सावधान रहना चाहिए।

शरीर का उचित वजन बनाए रखें: स्वस्थ भोजन करें और अपने वजन को नियंत्रित रखें। इसके अलावा, आहार से संतृप्त वसा को खत्म करें और रोज़ाना बहुत सारे फल और सब्जियां खाने पर जोर दें।